श्री वीतरागाय नम ।

अथ श्री पांच सुमति तीन गुप्तिका थोकडा।



श्री उत्तराध्ययन सूत्रका अध्ययन २४ में पाच सुमति तीन गुप्तिका अधिकार है उसका थोकडा—

पाँच सुमति के नाम—इरिया सुमति १, भाषा सुमति २ एषणासुमति ३, आदान भण्ड मत निखेवणा सुमति ४, उच्चारपासवण खेल जल संघयण परीठावणीया सुमति ५॥ तीन गुप्तिके नाम—मनगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, कायगुप्ति ८,। इसको आठ प्रवचन माता भी कहते हैं।

१ इरियासुमति का चार* भेद—आलम्बन १, काल २, मार्ग ३, जयणा ४,। आलंबन के तीन भेद—ज्ञान, दर्शन, चारित्र। कालके दो भेद—दिन और रात। मार्ग के दो भेद—कुपन्थ वर्जीने सुपन्थ चाले। जयणाके चार भेद—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव। द्रव्य से—छ कायके जीवों को देखकर यत्नापूर्वक चाले। क्षेत्रसे—धूसरा (चार हाथ) प्रमाण देखकर यत्ना पूर्वक चाले। कालसे—दिनमें देखकर चले और रातमें पूजकर चले। भावसे—दश बोल छोडकर चले— शब्द, रूप, रस, गन्ध,

* नोट—पाठान्तरे पांच पांच भेद भी कहते हैं—१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, ५ गुण। गुणसे कर्म निर्जराका हेतु कहते है।

[illegible]

[illegible] ([illegible])

[illegible] २ ॥

[illegible] ॥ ३ ॥

[illegible] २ उद्देसिय (औद्देशिक)—जिस साधुके लिये आधाकर्मी [illegible] तो उद्देसिय दोष लगे। ३ पूईकम्मे [illegible] आधाकर्मी आहार का अंश [illegible] लगावे ते दोष। ५ ठवणा (स्था[illegible] [illegible] ६ पाहुडियाए (प्राभृतिका)—साधु आर्थ [illegible] [illegible] प्रकाश करके देवे ते दोष। ८ [illegible] देवे ते दोष। ९ पामिच्च [illegible]

(अपमित्य)—साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोप। १० परियट्टिए (परिवर्त्तितं)—साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर बदले में दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोप। ११ अभिहडे (अभिहृतं)—सामा जाकर आहारादि देवे ते दोप। १२ उभिन्ने (उद्भिन्न)—लेपनादिक (छादा) खोलकर देवे ते दोप। १३ मालोहडे (मालापहृत)—पीढो नीसरणी लगाकर ऊँचे नीचे तीरच्छे से वस्तु निकाल कर देवे ते दोप। १४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य)—निरवलसे सवल ज्वरजस्ती दिलवावे या खोस कर देवे ते दोप। १५ अणिसिट्ठे (अनिसृष्ट)—दो के सीरकी वस्तु एक दूसरे की विना मरजी देवे ते दोप। १६ अज्झोयरए (अध्यवपूरक)—अगाडी आधण माहि साधु आया जाण अधिक उर देवे ते दोप॥ इति उद्गम का १६ दोप॥

अथ उत्पाद का १६ दोप---(जीभ्यारे लोलुपीपणासे साधु लगावे)

मूल गाथा—धाई दूई निमित्त आजीव वणीमगे तिगिच्छाय। कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस एए॥ ३॥

पुव्वि-पच्छा-सथव विज्जा मंत य चूरण जोगे य। उप्पायणाइ दोसा सोलसमे मूलकम्म य॥ ४॥

१ धाई (धात्री)—धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोप। २ दूई (दूती)—दूतपना याने गृहस्थीका सन्देशा पहुचा कर आहारादि लेवे ते दोप। ३ निमित्ते (निमित्त)—भूत भविष्यत वर्त्तमान कालके लाभालाभ सुख दुख जीवित मरणादि बतला कर आहारादि लेवे ते दोप। ४ आजीव (आजीविका)—अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोप। ५ वणीमगे (वनीपक)—राक भिखारी की तरह दीनपना से आहारादि लेवे ते दोप। ६ तिगिच्छे (चिकित्सा)—वैद्यकी करके आहारादि लेवे ते दोप। ७ कोहे (क्रोध)—क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोप। ८ माणे (मान)—अहंकार करके लेवे ते

स्पर्श, वायणा, पूछणा, परिअट्टणा अणुपेहा, धर्मकथा' ॥ २ भाषा सुमतिका चार भेद—द्रव्य क्षेत्र, काल भाव। द्रव्यसे—आठ बोल छोडकर भाषा बोले क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य भय, मुखरी वचन, विकथा। क्षेत्रसे—रस्ते चालता नहीं बोले। कालसे—एक प्रहर रात्री जानेवाद दिन उदय तक बडे स्वरसे नहीं बोले। भावसे राग द्वेष रहित बोले। ३ एषणासुमति के चार भेद—द्रव्य क्षेत्र, काल भाव। द्रव्य से—बयालीस दोष छोड कर आहार पाणी लेवे।

अथ उद्‌गमका १६ दोष—(दातारसु लागे)

गाथा—आहाकम्मुद्देसिय पूईकम्मे य मीसजाए य। ठवणा पाहुडियाए पाओअर कीय पामिच्चे ॥ १ ॥

परियट्टिए अभिहडे उब्भिन्न मालोहड इय। आच्छिज्जे अणिसिट्ठ अज्झोयरए य सोलसमे ॥ २ ॥

[आ]धाकर्मी)—साधके निमित्त बनावे ते दोष। २ उद्देसियं (औद्देशिक)—जिस साधुके लिये आधाकर्मी [ ]ले तो उसको आधाकर्मी दोष लगे। और दूसरा साधु ले तो उद्देसिय दोष लगे। ३ पूईकम्मे [ ]ाहि आधाकर्मीका अंशमात्र भी मिल जाय 'हजार घरके आंतरे भी आधाकर्मी आहार का अंश [ ]ाए (मिश्र जाते)—आपरे वास्ते और साधु रे वास्ते भेला राधे ते दोष। ५ ठवणा (स्था- [प]नाकर रखे, दूसरे को न दे ते दोष। ६ पाहुडियाए (प्राभृतिका)—साधु अर्थ [ ] ७ पाओअर (प्रादुष्करण)—अंधारा माहि प्रकाश करके देवे ते दोष। ८ [ ]पात्र आदि मोल लाकर तथा उपाश्रय वेचाता लेकर देवे ते दोष। ९ पामिच्चे

(अपमित्य)—साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोप। १० परियट्टिए (परिवर्त्तित)—साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर वदले में दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोप। ११ अभिहडे (अभिहृत)—सामा आकर आहारादि देवे ते दोप। १२ उभिन्ने (उद्भिन्न)—लेपनादिक (छांदा) खोल्कर देवे ते दोप। १३ मालोहडे (मालापहृत)—पीढो नीसरणी लगाकर ऊँचे नीचे तीरच्छे से वस्तु निकाल कर देवे ते दोप। १४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य)—निरवल्से सवल जवरजस्ती दिलवावे या खोस कर देवे ते दोप। १५ अणिसिट्ठे (अनिसृष्ट)—दो के सीरकी वस्तु एक दूसरे की विना मरजी देवे ते दोप। १६ अज्झोयरए (अभ्यवपूरक)—अगाडी आधण माहि साधु आया जाण अधिक ऊर देवे ते दोप॥ इति उद्गम का १६ दोप॥

अथ उत्पाद का १६ दोप---(जीभ्यारे लोलुपीपणासे साधु लगावे)

मूल गाथा—धाई दूई निमित्त आजीव वणीमगे तिगिच्छाय। कोहे माणे माया लोभे य हवंति दस एए॥ ३॥

पुव्वि-पच्छा-संथव विज्जा मंते य चूएण जोगे य। उप्पायणाइ दोसा सोलसम मूलकम्म य॥ ४॥

१ धाई (धात्री)—धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोप। २ दूई (दूती)—दूतपना याने गृहस्थीका सन्देशा पहुचा कर आहारादि लेवे ते दोप। ३ निमित्ते (निमित्त)—भूत भविष्यत वर्त्तमान कालके लाभालाभ सुख दुःख जीवित मरणादि वतला कर आहारादि लेवे ते दोप। ४ आजीव (आजीविका)—अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोप। ५ वणीमगे (वनीपक)—राक भिखारी की तरह दीनपना से आहारादि लेवे ते दोप। ६ तिगिच्छे (चिकित्सा)—वैदकी करके आहारादि लेवे ते दोप। ७ कोहे (क्रोध)—क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोप। ८ माणे (मान)—अहंकार करके लेवे ते

४ आदानभंड मत निखेवणा सुमति का चार भेद—द्रव्य,क्षेत्र, काल,भाव । द्रव्यसे भंड उपगरण वस्त्रपात्र प्रमाणसे अधिक रक्खे नहीं, और जयणासे लेवे और जयणासे रक्खे। क्षेत्रसे इखरिया विखरिया राखे नहीं, और गृहस्थीके घर पर रक्खे नहीं। कालसे कालोकाल टाईमसर उपयोग पूर्वक पडिलेहण करे। भावसे धर्मका उपगरण राग द्वेष रहीन भोगवे ॥

५ उच्चार पासवण खेल जल संघयण परीठावणीया सुमतिका चार भेद—द्रव्य,क्षेत्र, काल भाव। द्रव्यसे दश बोल छोडके परठे "१ कोई आवे नहीं और कोई देखे भी नहीं वहाँ परठे। २ अपनी आत्मा और दूसरेकी आत्मा व्याघात नहीं पावे वहाँ परठे। ३ ऊंची नीची भूमिका हो वहा न परठे। ४ पोली भूमिका हो वहा नहीं परठे। ५ थोडे कालकी अचीत भूमिका हो वहा न परठे। ६ एक हाथ लम्बी, एक हाथ चौडी अचीत भूमिका हो वहा परठे। ७ जघन्य चार आगल धरती में अचीत भूमिका हो वहा परठे। ८ उन्दर प्रमुख के बील हो वहाँ न परठे। ९ बीज, हरा अंकुर हरी वनस्पति, लीलण, फूलण, त्रस, थावर जीव हो वहा न परठे। १० गावके या शहर के नजीक गृहस्थी को दुगंछा आवे वहा न परठे॥" क्षेत्रसे शहरमें रहा हुआ साधु शहर के नजीक न परठे, और गृहस्थी को दूगंछा आवे वहाँ न परठे। शहर बाहर रहा हुआ साधु शहरमें आय कर न परठे और रस्तेमें न परठे। कालसे कालोकाल पडगेरी पडिलेहणा करे, पाठान्तरे दिवसे देखी हुई भूमिकामें रात्रिये परठे। भावसे स्थानमेंसे जाते आवस्सहि आवस्सहि करे भूमिका पूजे, शक्रेन्द्र महाराजकी आज्ञा मागकर चार आगल ऊंचेसु परठे, परठकर तीन वार वोसिरे वोसिरे कहे, पीछा आता निस्सीहि निस्सीहि कहे और स्थानपर आय कर काउस्सग करे॥

अब तीन गुप्तिका भेद कहते है—मनगुप्ति—आर्त्त, रौद्र, उच्च, उद्देश संकल्प विकल्प में मन प्रवर्त्तावे नहीं १ सारंभ २समारंभ ३ आरंभ मनमें करे नहीं। वचन गुप्ति—चार विकथा करे नहीं, सारंभ समारंभ आरंभ वचनसे करे करावे नही।

कायगुप्ति—सनयणा जोग प्रवर्त्तावे, अजयणा जोग प्रवर्त्तावे नहीं, सारंभ समारंभ आरंभ कायासे कर करावे नहीं ॥ ❁

॥ इति पांचसुमति तीन गुप्तिका थोकडा समाप्तम् ॥

अथ २५॥ साढा पच्चीस आर्य देश—१ मगध देश राजगृहीनगरी १ कोड ६६ लाख ग्राम। २ अंग देश चंपानगरी ५ लाख ग्राम। ३ वंग देश तामलिप्तीनगरी १८ लाख ग्राम। ४ कलिंग देश कंचनपुर नगर २० लाख ग्राम। ५ काशी देश वाणारसी नगरी १ लाख ६० हजार ग्राम। ६ कोशल देश साकेत (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम। ७ कुरु देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाख २३ हजार ४२५ ग्राम। ८ कुशार्त्त देश सौरीपुर नगर १ लाख ४३ हजार ग्राम। ९ पांचाल देश कपिल्पुर नगर ३ लाख ६३ हजार ग्राम। १० जंगल देश अहिच्छत्ता नगरी १ लाख ४१ हजार ग्राम। ११ सोरठ देश द्वारावती (द्वारका) नगरी ६ लाख ८० हजार ५२६ ग्राम। १२ विदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार ग्राम। १३ वत्स (कच्छ) देश कोशंबी नगरी २८ हजार ग्राम। १४ शांडिल देश नंदीपुर नगरी २१ हजार ग्राम। १५ मलय देश भाद्दिल्पुर नगरी ७० हजार ग्राम। १६ वच्छ देश वैराटपुरी (नगरी) २ लाख ८८ हजार ग्राम। १७ वरण देश अच्छापुरी (नगरी) २४ हजार ग्राम। १८ दशार्ण देश मृतिकावती नगरी १८ हजार ग्राम। १९ चेदक (चेदी) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार ग्राम। २० सिंधू देश वीतभय (पाटण) नगर ६ लाख ८० हजार ५०० ग्राम। २१ सौवीर देश मथुरा नगरी ८ हजार ग्राम। २२ सूरसेन देश पावा नगरी ३६ हजार ग्राम। २३ भंग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५० ग्राम। २४ कुणाल देश सावत्थी नगरी ६३ हजार ग्राम। २५ लाट देश

❁ नोट—१ सारंभ कहेता यह मर जावे तो अच्छा ऐसा न विचारे। २ समारंभ कहता उसको कोई मार डाले ता अच्छा ऐसा न विचारे। ३ आरंभ कहेता मैं उसको मार डालु ऐसा न विचारे।

कोटीवर्ष नगरी ७ लाख १३ हजार ग्राम । २१ ॥ केकय (अर्द्ध कयेइ) अर्द्ध देश श्वेताम्बिका नगरी १ लाख २८ हजार ग्राम आर्य्य १ लाख २१ हजार ग्राम अनार्य्य ७ हजार ग्राम पालसे । ग्राम सख्या श्रीपन्नणाजी सूत्रके अर्थमें है ।

अथ पन्नरे कर्मभूमि क्षेत्र माहे देश खंड का विचार लिखते है—जबूद्वीपमें १० लाख ८८ हजार देश । धातकी खंडमें २१ लाख ७६ हजार देश । पुष्कराद्धमें २१ लाख ७६ हजार देश । सर्व आर्य देश ४३३५ जाणवा ॥ जबूद्वीप में ८६७ देश आर्य जाणवा, १० लाख ८७ हजार १३३ देश अनार्य जाणवा । धातकी खंडमें १७३४ देश आर्य, २१ लाख ७४ हजार २६६ देश अनार्य पुष्कराद्धमें १७३४ देश आर्य, २१ लाख ७४ हजार २६६ देश अनार्य जबू द्वीपरे भरत क्षेत्र में २५॥ देश आर्य ३११९७४॥ देश अनार्य । इम जबूद्वीपरे परवत में भी २५॥ देश आर्य ३११९७४॥ देश अनार्य । जबू द्वीपरे माहाविदेहमें ८१६ देश आर्य, १० लाख २३ हजार ८४ देश अनार्य । धातकी खंडरे २ भरत २ परवत एवं ४ क्षेत्रमें १०२ देश आर्य, १ लाख २७ हजार ८९८ देश अनार्य । धातकी खडरे २ माहाविदेहमें १६३२ देश आर्य २० लाख ४६ हजार ३६८ देश अनार्य । धातकी खडमें कहा जिस तरह ही पुष्कराद्धे में कह देणा । पन्नरे कर्म भूमि का खड १ हजार २० जाणवा । जबूद्वीपमें २०४ खड । धातकी खडमें ४०८ खड पुष्कराद्धमें ४०८ खड ॥ अढाइ द्वीपमें १७० आर्य खंड जाणवा ८५० अनार्य खड जाणवा । जबूद्वीपमें ३४ खंड आर्य, १७० खड अनार्य । धातकी खडमें ६८ खंड आर्य, ३४० खड अनार्य । पुष्कराद्धे में ६८ खंड आर्य, ३४० खड अनार्य । भरत क्षेत्रमें १ खंड आर्य ५ खड अनार्य । परवत क्षेत्रमें १ खड आर्य, ५ खंड अनार्य । माहाविदेह क्षेत्रमें ३२ खंड आर्य १६० खड अनार्य जाणवा ॥ इति १५ कर्मभूमि देश खंड विचार समाप्त ॥

* श्री वीतरागाय नम *

अथ श्री ज्ञानलब्धि का थोकड़ा प्रारभ ।

सूत्र भगवती जीरे शतक आठमें उद्देशे दूजेमें ज्ञान लब्धी (लब्धि) रो थोकडो चाले सो कहे छे —

जीव गइ इन्द्रि काए सुहुम पज्जत्त भवथा, भव सिद्धिआए सन्नी, लद्धि उपयोग जोगे, लेस्या कसाय वेदे, आहार नाण गोयरे, काल अन्तर अप्पाबहु परज्या चे दारिय ॥

जीव—समुच्चय जीवमें ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, पहिली नारकी भुवनपति वाणव्यतर देवता में ३ ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना, दूजी नारकीसु सातमी नारकी तक ज्योतिषी सु नवग्रैवेयक तक ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा, पाच अनुत्तर विमाणमें ३ ज्ञानरी नियमा, पाच स्थावर असन्नी मनुष्यमें २ अज्ञानरी नियमा, तीन विकलेन्द्रियमें असन्नी तिर्यंचमें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, सन्नी तिर्यंचमें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सन्नी मनुष्यमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सिद्ध भगवानमें केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १ ॥ २ गई—नरक गतियामें और देव गतियामें तीन ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना, तिर्यंच गतियामें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, मनुष्य गतियामें ३ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, सिद्ध गतिया में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ३ इंद्रि— सइन्द्रिया और पंचेन्द्रिया में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, एकेन्द्रिया में २ अज्ञानरी नियमा, तीन विकलेन्द्रिया में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, अणेन्द्रिया में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ४ काए—सकाइया और त्रसकाइया में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना,

पृथ्वीकाइया अपकाइयातेउ काइया वायुकाइया वनस्पति काइया में २ अज्ञानरी नियमा, अकाइया में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ५ सुइम—सुक्ष्म में २ अज्ञानरी नियमा, बादरमें ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, नो सुक्ष्म नो बादरमें केवलज्ञानरी नियमा ॥ ६ पज्जत्त—समुच्चय परजापतामें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पहिली नारकी सु नवग्रैवेयक तक रे परजापता में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा, पांच अनुत्तर विमाण रे परजापते में ३ ज्ञानरी नियमा, पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यंच रे परजापतेमें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, सन्नी तिर्यंच रे परजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मनुष्यरे परजापतेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, समुच्चय अपरजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पहिली नारकी भुवनपति वाणव्यंतर रे अपरजापते में ३ ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना,दूजी नारकी सुं छट्ठी नारकी तक और जोतिषी सु नवग्रैवेयक तक रे अपरजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा सातमी नारकी रे अपरजापते में ३ अज्ञानरी नियमा, पांच अनुतर विमाण रे अपरजापतमें ३ ज्ञानरी नियमा, पांच स्थावर असन्नी मनुष्य रे अपरजापतेमें २ अज्ञानरी नियमा, तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यंच सन्नी तिर्यंच रे अपरजापते में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा सन्नी मनुष्यरे अपरजापते में ३ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, नो परजापता नो अपरजापता में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ७ भवथा—नरक भवथामें और देव भवथामें ३ ज्ञानरी नियमा तीन अज्ञानरी भजना,तिर्यंच भवथामें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना मनुष्य भवथा में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सिद्ध भवथा में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ८ भवसिद्धिया—भव सिद्धिया में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना अभवी में ३ अज्ञानरी भजना नो भवी नो अभवी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ९ सन्नी—सन्नीमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना,असन्नी में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा,नो सन्नी नो असन्नी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १० लद्धि—लद्धिरा १ भेद ज्ञान दरसण, चारित्र, चरिताचरिते, दान, लाभ भोग, उवभोग वीर्य, इन्द्रिय । समुच्चय ज्ञान

लद्धिमें ५ ज्ञानरी भजना,तस्स अलद्धिये में ३ अज्ञानरी भजना, मतिज्ञान श्रुत ज्ञानरे लद्धिये में ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ३ अज्ञानरी भजना केवल ज्ञानरी नियमा, अवधि ज्ञानरे लद्धिये में ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मन परजव ज्ञानरे लद्धिये में ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, केवल ज्ञानरे लद्धियेमें केवल ज्ञानरी नियमा तस्स अलद्धियेम ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मति अज्ञान श्रुतअज्ञान रे लद्धियेमें ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञानरी भजना, विभग ज्ञानरे लद्धियेमें ३ अज्ञानरी नियमा, तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, समुच्चय दर्शन में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, समदर्शन लद्धियेमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धिये में ३ अज्ञानरी भजना, मिथ्यात दर्शन और मिश्र दर्शन लद्धिये में ३ अज्ञानरी भजना, तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, चक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन रे लद्धियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अवधि दर्शन रे लद्धिये में ४ज्ञानरी भजना ३ अज्ञानरी नियमा केवल दर्शन रे लद्धियेमें केवल ज्ञानरी नियमा, समुच्चय चारित्रमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सामायिक चारित्र छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्ध चारित्र सुक्ष्मसम्पराय चारित्ररे लद्धियेमें ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, यथाख्यात चारित्र रे लद्धियेमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, चरिता चरितेमें ३ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, दान लद्धि, लाभ लद्धि, भोग लद्धि, उपभोग लद्धि, वीर्य्य लद्धिमें ५ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें केवल ज्ञानरी नियमा, बाल वीर्य्य लद्धिमें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञानरी भजना, बाल पण्डित वीर्य्य लद्धियेमें ३ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पण्डित वीर्य्य लद्धिमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना; इन्द्रीलद्धियेमें ४ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, श्रोतेन्द्रिय चक्षु इन्द्रिय

घ्राणेन्द्रिय के लद्धियें मे ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमे २ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, रसेन्द्रियके लद्धिये मे ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमे केवलज्ञानरी नियमा २ अज्ञानरी नियमा, स्पर्शेन्द्रिय के लद्धियेमे ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलद्धियेमें केवल ज्ञानरी नियमा॥११ उपयोग सागार वहुता मणागार वहुतामें ५ ज्ञान ३ ज्ञानरी भजना ॥ १२ जोगे—सजोगी मनजोगी वचन जोगी काय जोगीमे ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना अजोगी मे केवल ज्ञानरी नियमा ॥

१३ लेश्या—सलेशी शुक्ल लेशी में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना,कृष्ण लेशी नील लेशी कापोत लेशी तेजो लेशी पद्मलेशी में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना अलेशी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १४ कषाय—स कषाय क्रोध कषाय मान कषाय माया कषाय लोभ कषाय में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अकषायमें ५ ज्ञानरी भजना॥ १५ वेद– सवेद स्त्री वेद पुरुष वेद नपुंसक वेदमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अवेदी में ५ ज्ञान री भजना ॥ १६ आहार—आहारिक में ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, अणाहारिक में ४ ज्ञान (मन परजव ज्ञान टल्यो) ३ अज्ञान री भजना ॥ १७ नाण गोयरे—मति ज्ञानी द्रव्य थकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी आदेशणं सव्व दिव्वाइ जाणे पासे ॥ श्रुतज्ञानी द्रव्य थकी क्षेत्रथकी कालथकी भावथकी उपयोग सहित जाणे पासे ॥ अवधि ज्ञानी द्रव्य क्षेत्र काल भाव। द्रव्य थकी सव रूपी द्रव्य जाणे देखे, क्षेत्रथकी जघन्य तो अंगुलनो असंख्यातमो भाग जाणे देखे, उत्कृष्टो सर्व लोक अने लोक सरीखा असंख्याता खंडवा आलोक में हुवे तोभी जाणे देखे,कालथकी जघन्य तो आवलीकारे,असंख्यात में भाग जाणे पासे उत्कृष्टो असंख्यातो काल असंख्याती अवसरपणी असंख्याती उत्सरपणी गयोकाल आगम्यो काल जाणे पासे, भावथकी सर्व भावरे अनन्तमें भाग जाणे पासे ॥ मनपर्यव ज्ञानी रा २ भेद ऋजुमति, विपुलमति, द्रव्य क्षेत्र काल भाव। द्रव्य थकी ऋजुमति अनन्ता अनन्त प्रदेशी स्कन्ध रूपी आठ फरसी जाणे देखे, विपुलमति अनन्ता अनन्त प्रदेशी स्कन्ध विशुद्ध नि

मंला जाणे देखे,क्षेत्र थकी ऋजुमति नीचो देखे तो रत्नप्रभा पुढवी रे खुडीयाक नामे पाथडे रे उपरले रो हेठलो तलो, तीर्छो देखे तो अढाई अगुल उणो अढाई द्वीप सन्नी पचेन्द्री रे मनरा भाव जाणे, उचो देखे तो जोतषीरो उपरलो तलो देखे, विपुलमति ऋजुमति माफक केणो। नवरङ्ग पटलो विशेष सपूर्ण अढाई द्वीप देखे विशुद्ध निर्मलो। कालथकी ऋजुमति जघन्य उत्कृष्टो पल्योपम रो असख्यातमो भाग जाणे देखे,विपुल मति जघन्य उत्कृष्टो पल्योपम रो असख्यातमों भाग विशुद्ध निर्मलो जाणे देखे, भावथकी ऋजुमति सर्व भावरे अन्तमे भाग जाणे देखे, विपुल मति सर्व भावरे अन्त में भाग विशुद्ध निर्मलो जाणे देखे॥ केवल ज्ञानी द्रव्य क्षेत्र काल भाव। द्रव्यथकी सर्व द्रव्य जाणे पासे (देखे), खेत्र थकी सर्व खेत्र जाणे पासे, कालथकी सर्वकाल जाणे पासे,भावथकी सर्व भाव जाणे पासे॥ मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी विभङ्ग ज्ञानी द्रव्य थकी खेत्र थकी कालथकी भावथकी आपरी गिराज में आवे सो देखे॥ १८ काल—काल कहता स्थिति समुच्चय ज्ञानी में भागा पावे २—साइया अपजविसीया—आद है पण अन्त नही। साइया सपजविसीया आद भी है अन्त भी है समुच्चय ज्ञानी रे दुजे भागे री सपज विसीयारी स्थिति जघन्य अन्तर मुहुर्त्तरी उत्कृष्ट ६६ सागर जाझेरी। और मतिज्ञान श्रुति ज्ञानरी स्थिति जघन्य अन्तर मुहुर्त री उत्कृष्टी ६६ सागर झाझेरी, अवधि ज्ञान री स्थिति जघन्य १ समयरी उत्कृष्टी ६६ सागर झाझेरी, मन पर्यव ज्ञानरी स्थिति जघन्य १ समय री उत्कृष्टी देस उणी कोड पूर्वरी। केवल ज्ञानीमें भागो पावे १ साइया अपजविसीया॥ मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानीमें भागा पावे ३ अणाइया अपजविसीया (आदिनहीं और अन्त भी नहीं अभवी जीव), अणाइया सपजविसीया (आदि नहीं अन्त है भवी जीव), साइया सपजविसीया (आदि भी है और अन्त भी है पडवाई समद्रष्टी), तीजे भांगेरी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहुर्त री उत्कृष्टी देस उणी अर्द्ध पुद्गलीकरी, विभङ्ग ज्ञानरी स्थिति जघन्य १ समय री उत्कृष्टी ३३ सागर देस उणी कोड पूर्व अधिक॥

१६ अन्तर—अन्तर कहता आतरो समुच्चय नाणी रे पहिले भागे रो केवल ज्ञान रो आन्तरो नथी, समुच्चय ज्ञानी रे दुजे भागे रो ४ ज्ञानरो आतरो पडे तो जघन्य अन्तर मुहुर्त रो उत्कृष्टो देस उणो अर्द्ध पुद्गलीकरो, मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी रे तीजे भांगे रो आतरो पडे तो जघन्य अन्तर मुहुर्त रो उत्कृष्टो ६६ सागर झाझेरो विभङ्ग ज्ञान रो आतरो पडे तो जघन्य अन्तर मुहुर्तरो उत्कृष्टो अनन्ते कालरो ॥२०॥ अल्पाबहु—अल्पा बहु कहता अल्प बहुत्व सबसें थोडा मन पर्यव ज्ञानो ते थकी अवधि ज्ञानी असंख्यात गुणा, ते थकी मति ज्ञानी श्रुत ज्ञानी आपसमे तुला विसेसाहीया केवल ज्ञानी अनन्त गुणा सबसे थोडा विभंग ज्ञानी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी आपस में तुला अनन्त गुणा। हवे ८ बोलरी भेली अल्पा बोध कहे छे—सबसे थोडा मन पर्यव ज्ञानी, ते थकी अवधिज्ञानी असंख्यात गुणा ते थकी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी आपस में तुला विसेसाहीया, ते थकी विभंग ज्ञानी असंख्यात गुणा ते थकी केवल ज्ञानी अनन्त गुणा ते थकी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी आपसमे तुला अनन्तगुणा ॥ २१ ॥ पज्जवा—पज्जवा कहता पज्जवा सबसे थोडा मन पर्यव ज्ञानीरा पज्जवा ते थकी अवधि ज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी श्रुत ज्ञानी रा पज्जवा अनन्त गुणा ते थकी मति ज्ञानी रा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी केवल ज्ञानी रा पज्जवा अनन्त गुणा, सबसे थोडा, विभंग ज्ञानी रा पज्जवा ते थकी श्रुत अज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी मति ज्ञानीरा पज्जवा अनंत गुणा ॥ हवे ८ बोलरी भेली अल्पाबोध कहें छे सब से थोडा मन पर्यव ज्ञानीरा पज्जवा, ते थकी विभङ्ग ज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी अवधि ज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी श्रुत अज्ञानी रा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी श्रुत ज्ञानीरा पज्जवा विसेसाहीया, ते थकी मति अज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा, ते थकी मति ज्ञानीरा पज्जवा विसेसाहीया ते थकी केवल ज्ञानीरा पज्जवा अनन्त गुणा ॥

इति ज्ञान लब्धिका थोकडा समाप्तम् ।

॥ अथ प्रस्ताविक थोकडा प्रारम्भ ॥

संघयण छव धरनेवालोंकी गति—छेवट्ठा संघयणका धणी चौथा देवलोक उपरान्त न जावे १, कीलका संघयणवाला छट्ठा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच संघयण वाला बारमा देवलोक तक जावे ४ ऋषभनाराच संघयण वाला नवग्रैवेयक तक जावे ५, वज्रऋषभनाराच संघयण वाला पाच अनुत्तर विमाण तक जावे ६, साख सूत्र भगवती जी शतक २४ मा उद्देशे २४ में।

छेवट्ठा संघयण वाला पहिलो दुजी नारकी तक जावे १, कीलका संघयणवाला तीजी नारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयण वाला चोथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पाचमी नारकी तक जावे ४, ऋषभनाराच संघयण वाला छट्ठी नारकी तक जावे ५, वज्रऋषभनाराच संघयण वाला सातमी नारकी तक जावे।

बोल छव—बादर पृथ्वीकाय सात नरक,बारह देवलोक,नव ग्रैवेयक,पाच अनुत्तर विमान और सिद्धशिला तक है १,बादर अप्पकाय-सात नरक,बारह देवलोक तक लाभे २। बादर तेउकाय-अढाई द्वीप सीम लाभे,नदी मेह मनुष्यका जन्म मरण प्रमुख अढाई द्वीप माहें हुवे आगल नहीं ३। बादर वायुकाय सगले लोक माहे लाभे ४। बादर वनस्पति काय सात नरक बारह देवलोक सीम लाभे ५। बेइन्द्रिय १ तेइन्द्रिय २, चोइन्द्रिय ३ जीव तीर्छा लोक माहे लाभे, उर्ध्व लोके मेरु पर्वत नी बावडी प्रमुखे लाभे, अधोलोके मेरु पर्वत थी पश्चिम दिशे छेहली दोय विजय अधोभूमि ग्रामने विषे लाभे, त्रस जीव लोकने मध्यवर्ती एक राज

प्रमाण त्रस नाडि लाभे, सूक्ष्म पृथ्वी काय आदि देइ पाच थावर सगले लोक माहे लाभे ॥ इति षट् काय विचार ॥

बोल छव गुणठाणेका—चौदह गुणठाणा में १ पहिलो तथा चौदमो छोड कर बाकी १२ गुणठाणा सजोगी नियमा भवी में पावे १। पहिलो दूजो तेरमो चोदमो गुणठाणो छोड कर बाकी १० गुणठाणा नियमा सन्नीमें पावे २। पहिले सु तीनो बारहमे सु चौदमो छोडकर ८ गुणठाणा उपशम सम्यक्त में पावे ३। पहिले सु चौथो इग्यारमें सु चौदमो छोडकर छव गुणठाणा सकषाइ यतीमे पावे ४। पहिले सु पांचमो दशमें सु चौदमो छोडकर ४ गुणठाणा सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें पावे ५। पहिले सु छट्ठो नवमेंसु चौदमो छोडकर दो गुणठाणा अप्रमादि हास्यादिक नोकषाईमें पावे ६।

छकायना जाव किहा घणा किहां थोडा ते कहे छे—पुढवी कायना जीव पूर्व दिशि घणा ते स्या माटे? गोतम! द्वीप छे ते माटे १। अप्पकायना जीव उत्तर दिशि घणा ते स्यां माटे? मान सरोवर छे ते माटे २। तेउकायना जीव पश्चिम दिशि घणा ते स्यां माटे? मनुष्य घणा ते माटे ३। वायुकायना जीव दक्षिण दिशि घणा ते स्या माटे? तिहां पोलाड घणी छे ते माटे ४। वनस्पतिना जीव उत्तर दिशि घणा छे ते स्यां माटे? जेमां मान सरोवर मध्ये कमल छे ते माटे ५। मनुष्य उत्तर अने दक्षिणे थोडा छे तेहथकी पूर्वे संख्यात गुणा अधिक तेह थी पश्चिममें पिण घणा ते स्यां माटे? विजयकुण्डी मनुष्य घणा ते माटे ६।

उपयोग बारे कहा कहा पावे?—एक उपयोग सिद्धामें पावे १। दोय उपयोग तेरमें चवदमें गुणठाणे पावे २। तीन उपयोग पाच स्थावर में पावे ३। चार उपयोग चौरेन्द्रिय पर्यासामें पावे ४, पांच उपयोग बेइन्द्रिय तेइन्द्रियमें पावे ५। छव उपयोग चोरेन्द्रियमें तथा श्रावकमें पावे ६। सात उपयोग सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहारविशुद्धि सुक्ष्मसम्पराय चारित्रमें पावे ७। आठ उपयोग बारें वहता सिद्ध गतियोंमें नारकी जीवमें अथवा अचर्म में पावे ८। नव उपयोग देवता यथाख्यात चारित्र में

पावे ६, दश उपयोग छद्मस्थ में पावे १०,इग्यार उपयोग संयतीरे अलद्धीयेमें पावे ११, बारह उपयोग समुच्चय जीवमें पावे १२।

जीवरा १४ भेद कहा कहा पावे ?—जीवरो भेद नारकी देवतारे पर्यासा में पावे १। जीवरा भेद सन्नीपचेन्द्रियमें पावे २, जीवरा भेद समुच्चय नारकीमें देवता में पावे ३। जीवरा भेद एकेन्द्रियमें पावे ४। जीवरा भेद भाषक में पावे ५। जीवरा भेद समद्रष्टि में पावे ६। जीवरा भेद पर्याप्ता में पावे ७। जीवरा भेद अणाहारिकमें पावे ८। जीवरा भेद औदारिकरे मिश्र में पावे ६। जीवरा भेद त्रसमें पावे १०। जीवरा भेद श्रुत इन्द्रिय रे अलद्धीयेमें पावे ११। जीवरा भेद बादरमें पावे १२, जीवरा भेद सासता पावे १३। जीवरा भेद समुच्चय जीव में पावे १४।

गुणठाणा चौदह कहाँ कहा लाधे—१ गुणठाणो मिथ्यात्वी में। २ गुणठाणा विकलेन्द्रिय में। ३ गुणठाणा विनय-वादीके समोसरणमें। ४ गुणठाणा नारकी में देवतामें। ५ गुणठाणा तिर्यंचमें। ६ गुणठाणा तीन माठी लेश्यामें। ७ गुणठाणा तेजो पद्मलेश्या में। ८ गुणठाणा छव हास्यादिक में। ६ गुणठाणा संज्वलरी त्रीकमें। १० गुणठाणा सज्वलरे लोभमें। ११ गुणठाणा मोहिनी मे। १२ गुणठाणा छद्मस्थमें। १३ गुणठाणा सयोगीमें। १४ गुणठाणा समुच्चय जीवमें।

पहिलो गुणठाणो वर्जीने १३ गुणठाणा नियमा भवीमें। २ गुणठाणा वर्जीने १२ गुणठाणा नियमा छव पर्याय में मन-योगीमें। ३ गुणठाणा वर्जीने ११ गुणठाणा क्षायिक समकितमें। ४ गुणठाणा वर्जीने १० गुणठाणा व्रतीमे। ५ गुणठाणा वर्जीने ६ गुणठाणा स यतिमें। ६ गुणठाणा वर्जीने, ८ गुणठाणा अप्रमादी में। ७ गुणठाणा वर्जीने ७ गुणठाणा शुक्ल ध्यान मे। ८ गुणठाणा वर्जीने छव गुणठाणा हास्यादिकरे अलद्धीये में। ६ गुणठाणा वर्जीने ५ गुणठाणा अवेदी में। १० दस गुणठाणा वर्जीने ४ गुणठाणा अकषाय में। ११ गुणठाणा वर्जीने ३ गुणठाणा खिण वीतरागीमें। १२ गुणठाणा

वर्जीने २ गुणठाणा केवली में । १२ गुणठाणा वर्जीने, १ गुणठाणो अयोगी में ।

भगवती सूत्र शतक ११ उद्देस नवमे बोल ४—मनुष्य तिर्यंचमे बैठा थकां नारकीमे जाणेवालेकु भव द्रव्य नेरीया कहीजे १। भवद्रव्य नारकीयारी [नेरियारी] स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्तकी, उत्कृष्टी क्रोड पूर्वकी। मनुष्य तिर्यंचमे बैठाथका देवतारो आउखो बांधे तिके भवद्रव्य देवकी स्थिति असुर कुमारादि १० भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी वैमानिक री स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टी ३ पल्यकी। मनुष्य तिर्यंच देवतामें बैठा थका पृथ्वी १ पाणी २, वनस्पति में जाणेवाले की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की, उत्कृष्टी २ सागर झाझेरी। मनुष्यमे तिर्यंच मे बैठा थकां तेउ १ वायु १ तीन विकलेन्द्रियमे जाणे वालेकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टी क्रोड पूर्वकी। व्याक गतिमे बैठा थका मनुष्य तिर्यंचमे जाणे वालेकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्टी ३३ सागर की।

२४ दण्डक का बोल—साधु आर्याजीमें १ दण्डक पावे। सराग में २ दण्डक पावे। विकलेन्द्रियमें ३ दण्डक पावे। सम्य वहता पृथ्वीकायादिकमें ४ दण्डक पावे। एकेन्द्रिय में ५ दण्डक पावे। घ्राणेन्द्रिय के अलद्धिये में ६। चक्षुइन्द्रियके अलद्धिय में ७, असन्नीयेमें ८। तिर्यंचमें ९। भवनपतिमें १०। नपुंसक में ११। तीरछे लोकमें १२। देवतामें १३। त्रसकायमें १३। मोगर्भजरे मन योगीमें १४। पुरुष वेदमें १५। पंचेन्द्रिय में १६। वैक्रीय शरीर में १७, तेजो लेश्यामें १८। त्रसकायमें १९। सत्वरे अलद्धिय में २०। नीचे लोकमें २१। माठी लेश्यामें २२। पृथ्वी पाणीरी आगतमें २३। सिद्धारे अलद्धियेमें दण्डक २४ पावे॥

॥ इति प्रस्ताविक थोकडा समाप्तम् ॥

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन ग्रन्थालय, ...

* श्रीवीतरायनम *

॥ अथ १०२ बोलका बासठियो ॥

गाथा—जीव गइ इंदिय काए, जोए वेए य कसाय लेसा य। सम्मत्त नाण दसण, संजए उवओग आहारे ॥ १ ॥

भासग परित्त पज्जत्त, सुहुम सन्नी भव चरमेय। जीवाय खेत्त बद्धे, पुग्गल महदण्डए चेव ॥ २ ॥

यह इक्कीस द्वारके बोल पर बासठ बोल कहा है उसका विस्तार—जीवका १४ भेद, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ और एक अल्पबहुत्व यह सब मिलकर बासठ बोल हुए। १ जीव द्वार—समुच्चय जीवमें—जीवके भेद १४, गुणस्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ २ गतिद्वार—१ नरक गतिमांहि—जीवके भेद तीन—सन्नी पर्याप्ता, अपर्याप्ता, असन्नी पचेन्द्रियका अपर्याप्ता। गुणस्थानक चार प्रथमसे। जोग ११—मनके ४, वचनके ४, वेक्रिय १, वैक्रियमिश्र १, कार्मण काय १। उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन, लेश्या ३ प्रथमसे ॥ २ तिर्यंचगति माहि—जीवके भेद १४ गुणठाणा ५ प्रथमसे। योग १३ आहारिक दो नहीं। उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन। लेश्या ६ ॥ ३ तिर्यंचणी मांहि—जीवके भेद २—सन्नी पर्याप्ता, अपर्याप्ता। गुणस्थानक ५ प्रथमसे। जोग १३—आहारिक दो नहीं। उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान

३ दर्शन। लेश्या ६ ॥ ४ मनुष्यमांहि—जीवके भेद ३—सञ्ज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता, असञ्ज्ञी अपर्याप्ता। गुणठाणा १४। योग १५। उपयोग १२। लेश्या ६ ॥ ५ मनुष्यणी मांहि—जीवके भेद २ सञ्ज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १४। जोग १५। उपयोग १२। लेश्या ६ ॥ ६ देवता मांहि—जीवके भेद ३—सञ्ज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता, असञ्ज्ञी अपर्याप्ता। गुणठाणा ४ प्रथमसे। जोग ११—४ मनके, ४ वचनके, २ वैक्रिय, १ कार्मणकाय। उपयोग ९—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन। लेश्या ६ ॥ ७ देवांगना माहि—जीवके भेद २—सञ्ज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणस्थानक ४ प्रथमसे। योग ११—४ मनके, ४ वचनके, २ वैक्रिय, १ कार्मणकाय। उपयोग ९—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन। लेश्या ४ प्रथमसे ॥ ८ सिद्धगति माहि—जीवके भेद नहीं। गुणठाणा नहीं। योग नहीं। उपयोग २ केवलनाण केवल दर्शन। लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़ा मनुष्यणी २ उससे मनुष्य असख्यात गुणा, ३ नारकी असख्यात गुणा ४ उससे तिर्यंचणी असंख्यात गुणी, ५ उससे देव असख्यात गुणा, ६ उससे देवागना संख्यात गुणी, ७ उससे सिद्ध अनन्त गुणा, ८ उससे तिर्यंच अनन्त गुणा ॥

३ इन्द्रिय द्वार—९ सइन्द्रिय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा १२ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवल दर्शन नहीं। लेश्या ६ ॥ १० एकेन्द्रिय मांहि—जीवके भेद ४—सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १ प्रथम। योग ५—२ औदारिक, २ वैक्रिय, १ कार्मणकाय। उपयोग ३—२ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन। लेश्या ४ प्रथमसे ॥ ११ बेइन्द्रिय माहि—जीवके भेद २ पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा २ प्रथमसे। योग ४—२ औदारिक, १ कार्मणकाय, १ व्यवहार भाषा। उपयोग ५—२ ज्ञान, २ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन। लेश्या ३ प्रथमसे ॥ १२ तेइन्द्रिय माहि—जीवके भेद २ पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा २ प्रथमसे। योग ४—२ औदारिक, १ कार्मणकाय, १ व्यवहार भाषा। उपयोग

५—२ ज्ञान, २ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन। लेश्या ३ प्रथमसे॥ १३ चौरिंद्रिय माहि—जीवके भद २ पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा २ प्रथमसे। योग ४—२ औदारिक, १ कार्मण, १ व्यवहार भाषा। उपयोग ६—२ ज्ञान, २ अज्ञान, २ दर्शन। लेश्या ३ प्रथमसे॥ १४ पंचेन्द्रिय माहि—जीवके भेद ४—सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता, असन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १२ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवल दर्शन नहीं। लेश्या ६॥ १५ अनेन्द्रिय माहि—जीवका भेद १ संज्ञी पर्याप्ता। गुणठाणा २ तेरहवां, चौदहवां। योग ५ या ७—२ मन, २ वचन, १ औदारिक या ३ काया। उपयोग २ केवलनाण केवल दर्शन। लेश्या १ शुक्ल लेश्या॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोडा पंचेन्द्रिय, उससे २ चौरिन्द्रिय विशेषाधिक, उससे ३ तेइन्द्रिय विशेषाधिक, उससे ४ बेइन्द्रिय विशेषाधिक, उससे ५ अनिन्द्रिय अनंतगुण, उससे ६ एकेन्द्रिय अनंतगुण, उससे ७ सइन्द्रिय विशेषाधिक॥

४ काय द्वार—१६ सकाय माहि—जीवके भेद १४ गुणस्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६॥ १७ पृथ्वीकाय मांहि—जीवके भेद ४ सूक्ष्म बादरका पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १ मिथ्यात्व। योग ३—२ औदारिक, १ कार्मण काय। उपयोग ३—२ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन। लेश्या ४ प्रथमसे॥ १८ अप्काय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी कायवत्। गुणठाणा १ प्रथम। योग ३ पृथ्वीकायवत्। उपयोग ३ पृथ्वी कायवत्। लेश्या ४ प्रथम से॥ १९ तेउकाय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी कायवत्। गुणठाणा १ प्रथम। योग ३ पृथ्वी कायवत्। उपयोग ३ पृथ्वी कायवत्। लेश्या ३ प्रथमसे॥ २० वाउकाय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी कायवत्। गुणठाणा १ प्रथम। योग ५—२ औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण। उपयोग ३ पृथ्वीकायवत्। लेश्या ३ प्रथमसे॥ २१ वनस्पतिकाय मांहि—जीवके भेद ४ पृथ्वीकायवत्। गुणठाणा १ प्रथम। योग ३ पृथ्वी-

कायवत्। उपयोग ३ पृथ्वी कायवत्। लेश्या ४ प्रथम ॥ २२ त्रसकाय माहि—जीवके भेद १० एकेन्द्रियका ४ भेद नहीं। गुणठाणा १४। योग १५। उपयोग १२। लेश्या ६॥ २३ अकाय माहि—जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवलनाण केवलदर्शन। लेश्या नहीं॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़ा त्रसकाय, उससे २ तेजस्काय असंख्यात गुणा, उससे ३ पृथ्वीकाय विशेषाधिक, उससे ४ अपकाय विशेषाधिक, उससे ५ वायुकाय विशेषाधिक, उससे ६ अकाय अनंत गुण, उससे ७ वनस्पतिकाय अनंत गुण, उससे ८ सकाय विशेषाधिक॥

५ योग द्वार—२४ सयोगी मांहि -जीवके भेद १४, गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६॥ २५ मनयोगी माहि—जीवका भेद १ सज्ञी पर्याप्ता। गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १४ कार्मण नहीं। उपयोग १२। लेश्या ६॥ २६ वचनयोग माहि—जीवके भेद ५—तीन विकलेन्द्रियके पर्याप्ता, सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्ता, असन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्ता। गुणठाणा १२ प्रथमसे। योग १४ कार्मण नहीं। उपयोग १२। लेश्या ६॥ २७ कायजोग माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५, उपयोग १२ लेश्या ६॥ २८ अयोग मांहि—जीवके भेद १ सन्नी पर्याप्ता। गुणठाणा १ चौदहवा। योग नहीं। उपयोग २ केवलज्ञान केवलदर्शन। लेश्या नहीं॥ अल्प बहुत्व द्वार—१ सबसे थोड़ा मनोयोगी उससे २ वचन योगी असंख्यात गुणा, उससे ३ अयोगी अनन्त गुणा, उससे ४ काययोगी अनन्त गुणा, उससे ५ सयोगी विशेषाधिक॥

६ वेद द्वार—२९ सवेदी माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवलदर्शन नहीं। लेश्या ६॥ ३० स्त्री वेद माहि—जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १३ आहा-

रिक दो नहीं। उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं। लेश्या ६॥ ३१ पुरुषवेद माहि—जीवके भेद २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवलदर्शन नहीं। लेश्या ६॥ ३२ नपुंसकवेद माँहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या ६॥ ३३ अवेद माँहि—जीवके भेद १ सन्नी पर्याप्ता। गुणठाणा ६ ९ से १४ तक। योग ११—२ वैक्रिय २ आहारिक नहीं। उपयोग ९ अज्ञान ३ नहीं। लेश्या १ शुक्ल॥ अल्प बहुत्व द्वार—१ सबसे थोड़ा पुरुष वेदी, उससे २ स्त्री वेदी सख्यात गुणी, उससे ३ अवेदी अनंत गुणा, उससे ४ नपुंसक वेदी अनंत गुण, उससे ५ सवेदी विशेषाधिक॥

७ कषाय द्वार—३४ सकषाय माहि—जीवके भेद १४, गुणठाणा १० प्रथम, योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवलदसण नहीं। लेश्या ६॥ ३५ क्रोधकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलनाण केवलदर्शन नहीं। लेश्या ६॥ ३६ मानकषाय माहि- जीवके भेद १४। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या ६॥ ३७ मायाकषाय माहि-जीवके भेद १४। गुणठाणा ९ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या ६॥ ३८ लोभकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा १० प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या ६॥ ३९ अकषाय माहि जीवके भेद १ सन्नी पर्याप्ता। गुणठाणा ४ उपरके। योग ११ ४ मन, ४ वचन, ३ काया। उपयोग ९ तीन अज्ञान नहीं। लेश्या १ शुक्ल॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़ा अकषायी, उससे २ मानकषायी अनन्त गुणा, उससे ३ क्रोधकषायी विशेषाधिक, उससे ४ मायाकषायी विशेषाधिक, उससे ५ लोभकषायी विशेषाधिक, उससे ६ सकषायी विशेषाधिक॥

८ लेश्या द्वार—४० सलेश्या माहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १२। लेश्या ६॥

४१ कृष्ण लेश्या माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या १ कृष्ण ॥ ४२ नील-लेश्या माहि-जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या १ नील ॥ ४३ कापोत लेश्या माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या १ कापोत ॥ ४४ तेजोलेश्या माहि-जीवके भेद ३ २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता, १ बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्ता। गुणठाणा ७ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या १ तेजो ॥ ४५ पद्मलेश्या माहि जीवके भेद २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा ७ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेश्या १ पद्म ॥ ४६ शुक्लेश्या माहि -जीवके भेद २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १२। लेश्या १ शुक्ल ॥ ४७ अलेश्या मांहि—जीवके भेद १ सन्नी पर्याप्ता। गुणठाणा १ चौदहवां। योग नहीं। उपयोग २ केवलनाण केवलदर्शन। लेश्या नहीं। अल्प बहुत्व-१ सबसे थोड़ा शुक्ल लेश्यी, उससे २ पद्मलेश्यी संख्यात गुणा, उससे ३ तेजो लेश्यी सख्यात गुणा, उससे ४ अलेश्यी अनन्तगुणा, उससे ५ कापोतलेश्यी अनन्तगुणा, उससे ६ नील लेश्यी विशेषाधिक, उससे ७ कृष्णलेश्यी विशेषाधिक, उससे ८ सलेश्यी विशेषाधिक ॥

६ समकित द्वार ४८ सम्यग्दृष्टिमाहि जीवके भेद ६-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, असन्नी पंचेंद्रिय इन चारका अपर्याप्ता, सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा १२ पहिला तीजा छोडकर। योग १५। उपयोग ९ तीन अज्ञान नहीं। लेश्या ६ ॥ ४९ सास्वादनमाहि जीवके भेद ६ सम्यग्दृष्टिवत। गुणठाणा १ दूजा। योग १३ आहारिक दो नहीं। उपयोग ६-३नाण ३ दर्शन। लेश्या ६॥ ५० उपशमसम्यक्तमाहि जीवके भेद २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा ८—४ से ११ तक। योग १५। उपयोग ७-४ ज्ञान ३ दर्शन। लेश्या ६ ॥ ५१ क्षयोपशम तथा वेदक माहि जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता, गुणठाणा ४ ४ से

७ तक । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन । लेश्या ६ ॥ ५२ क्षायिक समकित माहि—जीवके भेद २ सन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणठाणा ११—४ से १४ तक । योग १५ । उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं । लेश्या ६ ॥ ५३ मिथ्यात्व दृष्टि माहि जीवके भेद १४ । गुणठाणा प्रथम । योग १३ आहारिक दो नहीं । उपयोग ६-३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेश्या ६ ॥ ५४ सममिथ्यादृष्टि माहि—जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा १ तीजा । योग १०—४ मन ४ वचन १ औदारिक १ वैक्रिय । उपयोग ६—३ अनाण ३ दर्शन । लेश्या ६ ॥ अल्प बहुत्व-सबसे थोड़ा सास्वादनी, उससे २ उपशमी संख्यात गुणा, उससे ३ सम्यग् मिथ्यात्वी संख्यात गुणा, उससे ४ क्षयोपशम वेदक संख्यात गुणा, उससे ५ क्षायिक अनंत गुणा, उससे ६ सम्यग्दृष्टि विशेषाधिक, उससे ७ मिथ्यात्व अनतगुणा ॥

१० ज्ञान द्वार ५५ सनाणीमाहि-जीवके भेद ६ सम्यग्दृष्टिवत् । गुणठाणा १२ पहिला तीजा नहीं । योग १५ । उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं । लेश्या ६ ॥ ५६ मतिज्ञानीमाहि—जीवके भेद ६- सम्यग्दृष्टिवत् ॥ गुणठाणा १० पहिला तीजा तेरहवां चौदहवां नहीं योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेश्या ६ ॥ ५७ श्रुतज्ञानी माहि—जीवके भेद ६ सम्यग्दृष्टिवत् । गुणठाणा १० मतिज्ञानीवत् । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेश्या ६ ॥ ५८ अवधिज्ञानी माहि-जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणठाणा १० मतिज्ञानवत् । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेश्या ६ ॥ ५९ मनःपर्यवज्ञानी माहि जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा ७ छ से बारह तक । योग १४ कार्मण योग नहीं । उपयोग ७ । लेश्या ६ ॥ ६० केवलज्ञानी माहि—जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा २ तेरहवां चौदहवां । योग ५ या ७—२ मन, २ वचन, १ औदारिक या ३ काया । उपयोग २ केवलनाण केवल दर्शन । लेश्या १ परमशुक्ल ॥ ६१ मतिअज्ञानी माहि—जीवके भेद १४ । गुणठाणा २ पहिला तीजा । योग १३ आहारिक

शी नहीं। उपयोग ६—३ अज्ञान ३ दर्शन। लेश्या ६ ॥ ६२ श्रुत अज्ञानी माहि सब बोल मति अज्ञानीवत्॥ ६३ अनाणी माहि—सब बोल मति अज्ञानवत् ॥ ६४ विभंग अनाणी माहि-जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा २ पहिला तीजा। योग १३। उपयोग ६। लेश्या ६॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोडा मन पर्यव ज्ञानी, उससे २ अवधिज्ञानी असख्यात गुणा, उससे ३ मतिज्ञानी और ४ श्रुत ज्ञानी दोनों तुल्य (बराबर) विशेषाधिक, उससे ५ विभंगज्ञानी असख्यात गुणा, उससे ६ केवल ज्ञानी अनन्तगुणा, उससे ७ सनाणी विशेषाधिक, उससे ८ मति अज्ञानी ६ श्रुत अज्ञानि दोनों परस्पर तुल्य अनन्तगुणा, उससे १० अनाणी विशेषाधिक ॥

दर्शन द्वार—६५ चक्षुदर्शन माहि—जीवके भेद ६—२चौरिन्द्रियका ४ पंचेन्द्रियका। गुणठाणा १२ प्रथमसे, योग १४ कार्मण नहीं, उपयोग १० केवलनाण केवलदर्शन नहीं। लेश्या ६ ॥ ६६ अचक्षुदर्शन माहि—जीवके भेद १४ गुणठाणा १२ प्रथमसे, योग १५ उपयोग १० लेश्या ६ ॥ ६७ अवधि दर्शन माहि—जीवके भेद २ सज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता, गुणठाणा १२ प्रथमसे, योग १५, उपयोग १०, लेश्या ६ ॥ ६८ केवलदर्शन माहि—जीवका भेद १ संज्ञी पर्याप्ता, गुणठाण २ तेरहवाँ चौदहवाँ, योग ५ या ७—२ मन २ वचन १ औदारिक या ३ काया उपयोग २ केवलनाण केवलदर्शन लेश्या १ शुक्ल ॥ अल्प बहुत्व—१सबसे थोडा अवधि दर्शनमाहि, उससे २ चक्षुदर्शन असख्यात गुणा उससे ३ केवलदर्शन अनन्तगुणा, उससे ४ अचक्षुदर्शन अनन्तगुणा ॥

१२ सयतद्वार—६६ सयती माहि—जीवके भेद१ सज्ञी पर्याप्ता,गुणठाणा ६—६से १४ तक, योग १५ उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं, लेश्या ६ ॥ ७० सामायिक चारित्र माहि-जीवके भेद १ सज्ञी पर्याप्ता, गुणठाणा ४ ६ से ६ तक, योग १४ कार्मण योगनहीं, उपयोग ७चार ज्ञान तीन दर्शनके, लेश्या ६ ॥ ७१ छेदोपस्थापनीय माहि जीवके भेद १ सज्ञी पर्याप्ता, गुणठाणा ४—६

से ६ तक, योग १४ कार्मणयोग नहीं, उपयोग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन, लेश्या ६॥ ७२ परिहार विशुद्धि चारित्र माहि जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता गुणठाणा २ छट्ठा सातवाँ योग ६—४ मन, ४ वचन १ औदारिक, उपयोग ७ ४ ज्ञान ३ दर्शन। लेश्या ३ तेजो पद्म शुक्ल ॥ ७३ सूक्ष्म संपराय माहि जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता, गुणठाणा १ दशवाँ, योग ६ ४ मन ४वचन १ औदारिक, उपयोग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन, लेश्या १ शुक्ल ॥ ७४ यथाख्यात चारित्रमाहि—जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता, गुणठाणा ४ ११ से १४, योग ११-४ मन ४ वचन ३ काया, उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं, लेश्या १ शुक्ल ॥ ७५ संयतासंयतमाहि-जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता, गुणठाणा १ पाँचवाँ, योग १२-२ आहारिक १ कार्मण छोडकर, उपयोग- ६ ३ नाण ३ दर्शन, लेश्या ६ ॥ ७६ असंयती माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा ४ प्रथमसे, योग १३ आहारिक दो नहीं, उपयोग ६-३ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन, लेश्या ६ ॥ ७७ नोसंयत नो असंयत नोसंयतासंयत माहि-जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल ज्ञान केवल दर्शन, लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व सबसे थोड़ा १ सूक्ष्मसंपराय चारित्री, उससे २ परिहारविशुद्धि संख्यात गुणा, उससे ३ यथाख्यात चारित्री संख्यात गुणा, उससे ४ छेदोपस्थापनिक संख्यातगुणा, उससे ५ सामायिकचारित्री संख्यातगुणा उससे ६ संयति विशेषाधिक, उससे ७ संयतासंयति असंख्यात गुणा, उससे ८ नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयत अनंत गुणा, उससे ६ असंयति अनंतगुणा ॥

१३ उपयोग द्वार—७८ साकार उपयोगमाहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा १४, योग १५ उपयोग १२ लेश्या ६ ॥ ७६ अनाकार उपयोग माहि-जीवके भेद १४ गुणठाणा १३ दशवाँ नहीं, योग १५, उपयोग १२ लेश्या ६ ॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोड़ा अनाकार उपयोगी, उससे २ साकार उपयोगी संख्यात गुणा ॥

१४ आहार द्वार—८० आहारिक माहि—जीवके भेद १४ गुणठाणा १३ प्रथमसे, योग १४ कार्मण नहीं उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ ८१ अणआहारिक माहि—जीवके भेद ८—७ अपर्यासा १सन्नी पंचेन्द्रिय पर्यासा, गुणठाणा ५ घट १ २ ४ १३ १४ । योग १ कार्मण । उपयोग १० मन पर्यवज्ञान और चक्षुदर्शन नहीं । लेश्या ६ ॥ अल्प बहुत्व सबसे थोड़ा अणाहारिक, उससे आहारिक संख्यात गुणा ॥

१५ भासक द्वार—८२ भासक माहि जीवके भेद ५ तीन विकलेन्द्रिय और सन्नी असन्नी पचेन्द्रिय इन पाचोंका पर्यासा। गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १४ कार्मण नहीं, उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ ८३ अभासकमाहि-जीवके भेद १० तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी पंचेन्द्रिय नहीं, गुणठाणा ५ घट १ २ ४-१३-१४ । योग ५ २औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण। उपयोग १० या ११ मनप० चक्षुद नहीं या मनःपर्यवज्ञान नहीं। लेश्या ६॥ अल्प बहुत्व १सबसे थोड़ा भासक, उससे २ अभापक अनत गुणा ॥

१६ परित द्वार ८४ परितमाहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ ८५ अपरितमाहि-जीवके भेद १४, गुणठाण १ प्रथम, योग १३ आहारिक दो नहीं, उपयोग ६-३ नाण३ दर्शन, लेश्या ६ ॥ ८६ नो परित नो अपरितमाहि जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं योग नहीं उपयोग २ केवलज्ञान केवल दर्शन, लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व- १सबसे थोड़ा परित उससे २ नो परित नो अपरित अनतगुणा, उससे ३ अपरित अनतगुणा ॥

१७ पयात द्वार ८७ पर्यासामाहि जीवकेभेद७, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ ८८ अपर्यासमाहि जीवके भेद ७ गुणठाणा ३ प्रथम दूजा चौथा, योग ५ २ औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण, उपयोग ९ ३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन। लेश्या ६ ॥

८६ नो पर्यासा नो अपर्यासा माहि—जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योगनहीं, उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन,लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व १ सबसे थोडा नो पर्यास नो अपर्यास, २ उससे अपर्यास अनंतगुणा, उससे ३ पर्यास सख्यात गुणा ॥

१८ सूक्ष्म द्वार—६० सूक्ष्ममांहि-जीवके भेद २ एकेन्द्रिय पर्यासा अपर्यासा, गुणठाणा १ प्रथम, योग ३ २ औदारिक १ कार्मण, उपयोग ३ २ अनाण १ अचक्षुदर्शन, लेश्या ३ प्रथमसे ॥ ६१ बादरमाहि जीवके भेद १२ सूक्ष्म एकेन्द्रिय २ नहीं, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग १२ लेश्या ६ ॥ ६२ नो सूक्ष्म नो बादरमाहि जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व द्वार-सबसे थोडा १ नो सूक्ष्म नो बादर, उससे २ बादर अनतगुणा, उससे ३ सूक्ष्म सख्यात गुणा ॥

१९ संज्ञी द्वार—६३ संज्ञीमांहि-जीवके भेद २ संज्ञी पर्यासा अपर्यासा गुणठाणा १२ प्रथमसे, योग १५, उपयोग १० केवल नाण केवलदर्शन नहीं, लेश्या ६ ॥ ६४ असन्नी माहि जीवके भेद १२ स ज्ञीका २ भेद नहीं, गुणठाणा २ प्रथमसे। योग ६-२ औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण १ व्यवहारभाषा। उपयोग ६-२ ज्ञान, २ अज्ञान, २दर्शन। लेश्या ४ प्रथमसे ॥ ६५ नो संज्ञी नो असंज्ञी माहि जीवके भेद १ संज्ञी पर्यासा। गुणठाणा २ तेरहवाँ चौदहवाँ। योग ५ या ७-२ मन, २वचन १ औदारिक या ३ काया। उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन। लेश्या १ शुक्ल ॥ अल्प बहुत्व सबसे थोडा १ संज्ञी, उससे २ नोसंज्ञी नो असंज्ञी अनत गुणा, उससे ३ असंज्ञी अनंत गुणा ॥

२० भव्य द्वार-६६ भवी माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६॥ ६७ अभवी माहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १ प्रथम, योग १३ आहारिक दो नहीं। उपयोग ६-३ अज्ञान ३ दर्शन।लेश्या ६ ॥ ६८ नो भवी नो अभवी माहि

औयरके भेद नहीं गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन, लेश्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व सबसे थोड़ा १ अभवी, उससे २ नो भवी नो अभवी अनन्तगुण, उससे ३ भवी अनन्त गुण ॥

२१ चरम द्वार ९९चरममाहि आवके भेद १४, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग१२, लेश्या ६ ॥१०० अचरममाहि-जीवके भेद १४ गुणठाणा १ प्रथम । योग १३ आहारिक दो नहीं । उपयोग ८ ३ अज्ञान ४ दर्शन १ केवलनाण । लेश्या ६ ॥ अल्प बहुत्व १ सबसे थोड़ा अचरम उससे २ चरम अनन्त गुणा ॥

१०१ समुच्छिम मनुष्यमाहि-जीवके भेद १ असन्नी अपर्याप्ता गुणठाणा१ प्रथम, योग ३कार्मण औदारिक औदारिक मिश्र। उपयोग ४ २ अनाण २ दर्शन। लेश्या ३ प्रथमसे ॥ १०२ समुच्छिम तिर्यंच माहि-जीवके भेद २ असन्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा २ प्रथमसे। योग ४ २ औदारिक १ कार्मण १ व्यवहार भाषा। उपयोग ३ २ अनाण १ दर्शन। लेश्या ३ प्रथमसे ॥ अल्प बहुत्व सबसे थोड़ा १ समुच्छिम मनुष्य, उससे २ समुच्छिम तिर्यंच असंख्यात गुणा ॥

॥ इति १०२ बोल का बासठिया समाप्तम् ॥

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैनग्रन्थालय बीकानेर (राजपूताना)

॥ शुभं भवतु ॥

"४ समकित के ग्यारह द्वार को थोकडो"

१ नाम द्वार	क्षायिक	उपशम	क्षयोपशम	वेदक
२ लक्षण द्वार	७ प्रकृति खपावे अनन्तानुबंधी ४ क्रोध, मान माया, लोभ, सम्यक्त मोहिनी, मिश्र मोहिनी, मिथ्यात्व मोहिनी	७ प्रकृति उपशमावे	४ प्रकृति खपावे १ उपशमावे २ खपावे तथा उपशमावे	१ वेदे ६ खपावे तथा उपशमावे
३ आघण पावण द्वार	मनुष्य गतिमें आवे ४ गतिमें पावे	४ गति में आवे ४ गति में पावे	४ गति में आवे ४ गति में पावे	४ गति में आवे ४ गति में पावे
४ द्रव्य प्रमाण द्वार	अनन्त	असख्याता	असंख्याता	असख्याता
५ स्थीति द्वार	सादि अनन्त, आदि है अन्त नहीं	स्थीति अंतर्मुहूर्त्त	जघन्य अंतर मुहूर्त्त, उत्कृष्ट ६६ सागर भाजेरी	जघन्य अंतर मुहूर्त्त, उत्कृष्ट ६६ सागर भाजेरी
६ विच्छेद द्वार	विछेद नहीं	भजना	विछेद नहीं	विछेद नहीं

७ निरंतर द्वार	८ समय तक निरंतर आवे	आवलिकारे असंख्यात में भाग	आवलिकारे असंख्यात में भाग	आवलिकारे असंख्यात में भाग
८ सअंतर द्वार	आंतरो नहीं	जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्टो देश उणो आधा पुद्गल परावर्त्तन	जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट देश उणो आधा पुद्गल परावर्त्तन	जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश उणो आधा पुद्गल परावर्त्तन
९ आकर्ष द्वार	एक वार आया पीछे जावे नहीं	एक भव में जघन्य एकवार उत्कृष्ट २ वार आवे घणा भव में जघन्य दो वार उत्कृष्ट पांच वार आवे	एक भव आश्री जघन्य एक वार उत्कृष्ट प्रत्येक हजार वार, घणा भव आश्री जघन्य दो वार उत्कृष्ट असंख्यातिवार	क्षय उपशम माफिक
१० स्पर्शना द्वार	समुच्चय लोक फरसे	७ राज माठेरो फरसे	७ राज माठेरो फरसे	७ राजमाठेरो फरसे
११ अल्प बहुत्व द्वार	क्षायक रा धणी अनन्ता	सबसे थोडा उपशम सम्यक्त रा धणी	क्षय उपशम रा धणी असंख्यात गुणा	वेदक सम्यक्त्व रा धणी संख्यात गुणा

साधुके ५२ अनाचार-सूत्र श्री दशवैकालिक अध्ययन तीजामें

१ आधाकर्मी वस्त्र पात्र मकान और आहारादिक साधुके निमित्त बनाया हुवा भोगवे ते अनाचार। २ साधुके लिये मोल लाया हुवा भोगवे ते अनाचार। ३ नित्य प्रति एक घरका आहारादि भोगवे ते अनाचार। ४ सामने लाया हुवा आहारादिक भोगवे ते या दूजे गामसे मंगाय दे ते अनाचार। ५ रात्रो भोजन करे ते अनाचार। ६ स्नान करे ते अनाचार। ७ गन्ध तैल फुलेल कपुरादिककी सुगन्ध लेवे ते अनाचार। ८ पुष्प मालादि पहिरे ते अनाचार। ९ पखादिसे हवा लेवे ते अनाचार। १० स्निग्ध आहार पाणी घृत गुडादिक रात्री रखे ते अनाचार। ११ गृहस्थीके भाजन (बरतन) में जीमे ते अनाचार। १२ राजपिण्ड आहार भोगवे ते अनाचार। १३ किमिच्छक सत्रूकार (दानशाला) रो आहारादिक भोगवे ते अनाचार। १४ मर्दन करे ते अनाचार। १५ दांत पखाले, मुख धोवे ते अनाचार। १६ गृहस्थी की सुख साता पूछे ते अनाचार। १७ काच प्रमुखमें मुख देखे ते अनाचार। १८ जुवा रमे ते अनाचार। १९ चोपड़ पासा सतरजादि खेले ते अनाचार। २० छत्र माथे उपर धारण करे ते अनाचार। २१ दवा औषध तथा वैद्यकी करे ते अनाचार। २२ पगरखो मोजा आदि पहरे ते अनाचार। २३ अग्नि को आरंभ समारंभ करे ते अनाचार। २४ सज्झातर के घर का पिंड (असणादिक) भोगवे ते अनाचार। २५ गृहस्थीके गादी तकिया आदि आसण पर बैठे ते अनाचार। २६ गृहस्थीके माचे, पलंग, ढोलीये पर बैठे ते अनाचार। २७ गृहस्थीके घरे बिमार, तपशी, अशक्ति, यह तीन कारण बिना बैठे ते अनाचार। २८ शरीरके पीठी, मालिस वगैरह करे ते अनाचार। २९ गृहस्थासे वैयावच्च करावे तथा गृहस्थीकी वैयावच्च करे ते अनाचार। ३० जाति कुल बताय के आजीवका करे ते अनाचार। ३१ मिश्र पाणी (अध कच्चो पाणी) भोगवे ते अनाचार। ३२ रोग पीडा आया गृहस्थी रो देवता रो शरणो वछे ते अनाचार। ३३ मूलो, आदो काचो भोगवे ते अनाचार। ३४ शेलडी खंड प्रमुख भोगवे ते अनाचार। ३५ कंद वजकंद सूरण कंदादिक भोगवे ते अनाचार। ३६ मूल वृक्षादिक भोगवे ते

अनाचार। ३७ फल अनार नीम्बु आदि भोगवे ते अनाचार। ३८ बीज तिलादि भोगवे ते अनाचार। ३९ सचित सेंचल लूण भोगवे ते अनाचार। ४० सिन्धो लूण भोगवे ते अनाचार। ४१ खारी लूण भोगवे ते अनाचार। ४२ रोम लूण (रोमक क्षार) भोगवे ते अनाचार। ४३ सामुद्रका लूण काचा भोगवे तो अनाचार। ४४ काला लूण पर्वतका काचा भोगवे ते अनाचार ४५ कपडोंके धूप खेवे ते अनाचार। ४६ वमन (उलटी) करे ते अनाचार। ४७ गला हेठला केश लेवे ते अनाचार। ४८ विरेचन (जुलाब) लेवे ते अनाचार। ४९ आखमें अञ्जन लगावे ते अनाचार। ५० दात ओष्ठ (होठ) रगे मीसी लगावे ते अनाचार। ५१ शरीरके तैलादि मालिस करे ते अनाचार। ५२ शरीरकी शुश्रूषा विभूषा करे ते अनाचार

नोट —२५ वो २६ वो अनाचार कोई भेला भी कहे छै, ३३ वो अनाचार काचे मूलेरो तथा आदेरो कोई अलग अलग कहे छै।

७० गुण करणसित्तरीके

गाथा—पिण्डविसोही सुमइ भावणा पढिमा य इ दिय निरोहो। पडिलेहणा गुत्तिओ अभिग्गह चैवकरण तु॥ १॥

पिण्डविशुद्धिके ४ भेद—१ आहार पाणी सुपडी सोपारी आदि फासुक निर्जीव विधियुक्त लेवे। २ वस्त्र सूत या ऊनके सफेद रङ्गके कपडे मानोपेत (साधुको ७२ हाथ और साध्वीको ९६ हाथ) निर्दोष ग्रहण करे। ३ काष्ठ तुम्बे प्रमुखका पात्र यथाविधि लेवे ४ अठारे प्रकारके निर्दोष स्थानक मालिकको आज्ञासे लेवे यह चार शुद्धि साचवे।

पाच सुमति युक्त सदा रहे। १२ भावना भावे। १२ पडिमा धारे। ५ इन्द्रिय वसमें करे। २५ पडिलेहणा। ३ गुप्ति। ४ अभिग्रह—द्रव्य क्षेत्र काल भाव। यह सब मिलकर ७० गुण करणसित्तरी के हुए।

७० गुण चरण सित्तरीके

गाथा—वयसमण धम्म संयम वेयावच्च च बम गुत्तिओ। नाणाइ नीयतव कोहोनिग्गहाइ चरणमेयं॥ २॥

५ महाव्रत। १० प्रकार का साधु धर्म। १७ प्रकारका संयम। १० वैयावच्च करे। ६ वाड शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले। ३ ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयी आराधे। १२ भेदे तप करे। ४ कषाय निग्रह करे। यह सब मिलकर ७० गुण चरण सित्तरीके हुए।

पाच व्यवहार श्री भगवती सूत्रमे कहे सो लिखते हैं।

पञ्च व्यवहार पण्णत्ता तंजहा—आगमो सूय आणा धारणा जीए।

१ पहेलो आगम व्यवहार—श्रीतीर्थंकर केवल ज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक यावत् दश पूर्वधारी प्रवर्तते हो उनकी आज्ञामें प्रवर्त्तें सो आगम व्यवहार। २ दूजो सूत्र व्यवहार—आचारांगादिक सूत्रोंमें कहे मुजब प्रवर्तें सो सूत्र व्यवहार। ३ तीजो आणा व्यवहार—जिस वक्त जो आचार्य प्रवर्त्तते हो उनकी आज्ञा में प्रवर्तते सो आणा व्यवहार, । ४ चोथो धारण व्यवहार—पूर्व परंपरासे चला आया आचार गोचारादिकमें प्रवर्तें तथा गुरु आदिकसे धारणाकर रखी हो उस मुजब प्रायश्चित देवे सो धारणा व्यवहार। ५ पाचमो जीत व्यवहार—द्रव्य क्षेत्र काल भावमें फरक पडा देख, या संघयणादिक की होणता देख आचार्य और चतुर्विध संघ मिलकर जो निर्वद्य मर्यादा बाधे उस मुजब प्रवर्त्तें सो जीत व्यवहार। इन पाच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्त्तता हुआ साधु भगवंतकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता है।

३४ असज्झायके नाम—

१ उल्कापात—तारा तुटे तो एक पोहर असज्झाय। २ दिशादाहा—फजर और शामको दिशा लाल रंगकी रहे वहां तककी असज्झाय। ३ गजिया—गर्जना होवे तो एक पोहर असज्झाय। ४ विज्जुए—विजली होनेसे दोय पोहर (प्रहर) असज्झाय, परन्तु गाज और विजलीकी आर्द्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र तक असज्झाय न गिणना और सदा गिणना।

५ निग्घाए कडकेनो जघन्य आठ, उत्कृष्ट बारह प्रहर को असज्झाय। ६ जुवे—बालचंद्र शुक्ल पक्षकी पडिवा द्वितीया तृतीया ए तीन रात्रमें चन्द्रमा रहे वहा तकको असज्झाय। कोई एक प्रहरको भी कहते हैं। ७ जक्खाले—आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिकके चिन्ह दिखे वहा तक असज्झाय। ८ धुम्मीए—काली धूवर पडे वहा तक असज्झाय। ९ महिये श्वेत धूवर (मेगरवा) पडे वहा तक असज्झाय। १० उग्घाए आकाशमें धूलका गोटा (दोटा) चढा हुवा दिखे वहा तक असज्झाय। १२ सोणी—रक्त (लोही) दृष्टिमें आवे वहा तक असज्झाय। १३ अट्ठी अस्थी (हड्डी) दृष्टिमें आवे वहा तक असज्झाय। १४ उच्चार—विष्टा दृष्टिमें आवे वहा तक असज्झाय। १५ समसाण—श्मशानके चारो तरफ सो सो हाथ असज्झाय। १६ रायमरणे—राजाके मृत्यु बाद दूसरा राजा बैठे वहा तक या हडताल रहे वहा तक असज्झाय। १७ रायवुग्गह—राजाओंका युद्ध होवे वहा तक असज्झाय। १८ चन्द्ररागे—चन्द्रग्रहण होय तो जघन्य ६ उत्कृष्टो १२ प्रहर, खग्रास होनेसे १६ प्रहर, थोडा ग्रहण होनेसे कमी काल असज्झाय समझना। १९ सुरोवरागे—सूर्य्यग्रहण होय तो १२ प्रहर, असज्झाय। २० उवसतो—पचेंद्रियका कलेवर निर्जीव देह पडा होवे तो चारो तरफ सो सो हाथ असज्झाय। २१ आश्विन सुदि पूर्णिमा असज्झाय। २२ कार्त्तिक वदि प्रतिपदा असज्झाय। २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असज्झाय। २४ मृगशीर्ष वदि प्रतिपदा असज्झाय। २५ चैत्र सुदी पूर्णिमा असज्झाय। २६ वैसाख वदी प्रतिपदा असज्झाय। २७ आषाढ सुदी पूर्णिमा असज्झाय। २८ श्रावण वदि प्रतिपदा असज्झाय। २९ भाद्र सुदि पूर्णीमा असज्झाय। ३० आश्विन वदि प्रतिपदा असज्झाय। ये दश दिन और रात संपूर्ण असज्झाय पालना। ३१ प्रभात, ३२ दो प्रहर (मध्यान), ३३ शाम ३४ मध्य रात्री, ये ४ वक्त शेषकी (छेहली) ३१ ३२ ३३ ३४ वी घडीक मुहूर्त्त असज्झाय ये ३४ असज्झाय टालकर सूत्र भणना।

॥ शुभ भवतु ॥ ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर (राजपूताना)

* श्री वीतरागाय नम *

॥ अथ साधुके आहारका १०६ दोष ॥

(साधुको अकल्पनीक)

अथ उद्गमका १६ दोष—(दातारसुं लागे)

मूल गाथा-आहाकम्मुद्देसिय[1][2] पूईकम्मे[3] य मीसजाए[4] य। ठवणा[5] पाहुडियाए[6] पाओअर[7] कीय[8] पामिच्चे[9]।१।

परियट्टिए[10] अभिहडे[11] उब्भिन्ने[12] मालोहडे[13] इय। अच्छिज्जे[14] अणिसिट्ठे[15] अज्झोयरए[16] य सोलसमे।२।

१ **आहाकम्मे (आधाकर्मी)**—साधुके निमित्त बनावे ते दोष। २ **उद्देसिय (औद्देशिक)**—जिस साधुके लिये आधाकर्मी आहार बनाया है वही साधु ले तो उसको आधाकर्मी दोष लगे। और दूसरा साधु ले तो उद्देसिय दोष लगे। ३ **पूईकम्मे (पूतिकर्म)**—सूजता आहार माहि अधाकर्मीका अंशमात्र भी मिलजाय 'हजार घरके आंतरे भी आधाकर्मी आहारका अंशमात्र मिल जाय' ते दोष। ४ **मीसजाए (मिश्रजाते)**—आपरे वास्ते और साधुरे वास्ते भेला राधे ते दोष। ५ **ठवणा (स्थापना)**—साधु निमित्त असनादि आहार स्थापकर रखे,दूसरे को न दे ते दोष।६ **प्राहुडियाए (प्राभृतिका)**—साधु अर्थे पावणा (महमान) आघा पाछा करे ते दोष। ७ **पाओअर (प्रादुष्करण)**—अंधारा

माहि प्रकाश करके देवे ते दोप। ८ कीय (क्रीत)—साधु निमित्त आहार वस्त्र और पात्र आदि मोल लाकर तथा उपाश्रय वेचाता लेकर देवे ते दोप। ६ पामिच्चे (अपमित्य)—साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोप। १० परियट्टिए परिवर्त्तित)—साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर वदलेमें दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोप। ११ अभिहडे (अभिहृत)—सामा जाकर आहारादि देवे ते दोप। १२ उब्भिन्ने (उद्भिन्न)—लेपनादिक (छादा) खोलकर देवे ते दोप। १३—मालोहडे (मालापहृत)—पीढो नीसरणी लगा कर ऊचे नीचे तीरच्छे से वस्तु नीकाल कर देवे ते दोप। १४ अच्छिज्जे (आच्छेद्य)—निरवलसे सबल जबरजस्ती दिलावे या खोस कर देवे ते दोप। १५ अणिसिट्ठे (अनिसृष्ट)—दो के सीरकी वस्तु एक दूसरेकी विना मरजी देवे ते दोप। १६ अज्झोयरए (अध्यवपूरक)—अगाडी आधण माहि साधु आया जाण अधिक ऊर देवे ते दोप। ॥ इति उद्गमका १६ दोष ॥

॥ अथ उत्पाद का १६ दोप—(जीभ्यारे लोलुपीपणासे साधु लगावे) ॥

मूलगाथा-धाई[१] दूई[२] निमित्ते[३] आजीव[४] वणीमगे[५] तिगिच्छा[६] य। कोहे[७] माणे[८] माया[९] लोभे[१०] य हवति दस एए।३

पुव्वि-पच्छा-संथव[११] विज्जा[१२] मंते[१३] य चूण्ण[१४] जोगे[१५] य। उप्पायणाइ दोसा सोलसमे मूलकम्मे[१६] य ॥४॥

१ धाई (धात्री)—धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोप ।२ दूई (दूती)—दूतपना याने गृहस्थीका सन्देशा पहुचा कर आहारादि लेवे ते दोप । ३ निमित्ते (निमित्त)—भूत भविष्य वर्त्तमान कालके लाभालाभ सुखदु ख जीवित मरणादि बतला कर आहारादि लेवे ते दोप । ४ आजीव (आजीविका)—अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोप । ५ वणीमगे (वनीपक)—राक भीखारी की तरह दीनपनासे मागकर आहारादि लेवे ते दोप । ६ तिगिच्छे (चिकित्सा)—वैद्य की करके आहारादि लेवे ते दोप । ७ कोहे (क्रोध) —क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोप । ८ माणे (मान) —अहंकार करके लेवे ते दोप । ६ माया (माया)—कपटाई करके लेवे ते दोप १० लोभे (लोभ)—लोभ करके अधिक आहारादि लेवे, अथवा लोभ बतला कर लेवे ते दोप । ११ पुव्विपच्छासथव (पूर्व पश्चात् संस्तव)—पहले या पिछे दातार की प्रशंसा करके आहारादि लेवे ते दोप । १२ विज्जा (विद्या)—जिसकी अधिष्ठाता देवी हो अथवा जो साधनासे सिद्ध की गई हो उसको विद्या कहते हैं, ऐसी विद्या का प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोप । १३ मते (मन्त्र)—जिसका अधिष्ठाता देव हो अथवा बिना साधनाके अक्षरविन्यास मात्र हो उसको मन्त्र कहते है, ऐसा मंत्रका प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोप । १४ चुण्ण (चूर्ण)—एक वस्तुके साथ दूसरी वस्तु मिलानेसे अनेक तरहकी सिद्धि हो ऐसा अदृष्ट अंजनादिके प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोप । १५ जोगे (योग)—पाद (पग) लेपनादि सिद्धि बतला कर आहारादि लेवे ते दोप । १६ मूलकम्मे (मूलकर्म)—गर्भपातादि औपध बतला कर आहारादि लेवे ते दोप ॥ इति उत्पातरा १६ दोप ॥

॥ अथ एषणारा १० दोष—(गृहस्थी तथा साधु दोनो से लागे)

मूलगाथा—सकिय मक्खिय निक्खित्त पिहिय साहरिय दायगुम्मीसे ।

अपरिणय लित्त छड्डिय एसणदोसा दस हवंति ॥ ५ ॥

१ सकिय (शङ्कित)—गृहस्थी को तथा साधु को शङ्का पड जाने बाद आहारादि लेवे ते दोष । २ मक्खिय (म्रक्षित)—सचित्त पाणी आदिसे हाथ की रखा या पात्र भींजे हो उसके हाथसे आहारादि लेवे ते दोष । ३ निक्खित्त (निक्षिप्त)—असूजति वस्तु उपर सूजति वस्तु पडी हो ते लेवे ते दोष । ४ पिहिय (पिहित)—सूजति वस्तु सचित्तसे ढाकी हो ते लेवे ते दोष। ५ साहरिय (संहृत)—अजोग वस्तु जिस वासणमें पडी हो वह वस्तु दूसरे वासणमें घालकर उसी वासणसे जो योग्य आहार देवे ते लेवे ते दोष । या जहा पश्चात कर्म होनेकी संभावना हो ऐसे घरमें एक भाजनसे दूसरे भाजनमें आहारादि घाल कर दे उसमें पिछेसे सचित्त पाणीसे धानेकी शंका होने पर उसी भाजनसे आहारादि लेवे ते दोष । ६ दायग (दायक)—अंधा लूला लंगडा आदि अजयणा करता वहरावे उससे लेवे ते दोष । ७ उम्मीसे (उन्मिश्र)—मिश्र चीज लेवे ते दोष । ८ अपरिणय (अपरिणत)—शस्त्र पूरा परगम्या विना थोडे समयरा लेवे ते दोष । ९ लित्त (लिप्त) तुरतकी जगह लीपी हुई हो उसको उल्लंघ कर आहारादि लेवे ते दोष । १० छड्डिय (छर्दित)—अन्नादि छाटा पडता लेवे ते दोष । ॥ इति एषणारा १० दोष ॥

॥ अथ ५ दोष आवश्यकरा ॥

१ उघाड किवाड उग्घाडणाए चू चू करतो कवाड ठेलीने उघाड कर तथा उघडाय कर आहारादि ले ते दोष। २ मडीपाहुडिआए—शेष निकाला हुवा लेवे ते दोष। ३ बलिपाहुडिआए—उच्छालनेके अर्थे किया हुआ वल घाकुला उछाल्या पहेला लेवे ते दोष। उच्छालने वाद गृहस्थी भोगवे वह लेना न अटके। ४ अदिट्ठपाहुडिआए—अणदिठे वासण का आहागादि लेवे ते दोष। ५ परिट्ठावणिआए—नरस आहार को परठावने की इच्छा कर सरस आहारादि लेवे ते दोष।

॥ अथ २ दोष उत्तराध्ययनरा ॥

१ सेणीएपिंड—अपने पूर्व सज्जनादि (नातिला गोतिला) से ही लाया हुआ आहार करे ते दोष। २ अकारण (मकारण)—विना कारण चीज माग कर लावे ते दोष।

॥ अथ २३ दोष दशवैकालिकरा ॥

१ दाणट्ठा—ग्रहगोचरादिके निमित्त डाकोत वगैरहके वास्ते किया हुआ आहारादि वह जिम्या पहेला लेवे ते दोष, उसके जीमने वाद वचा हुआ गृहस्थी जीमे तो वह लेने में अटके नहीं। २ पुणट्ठा—पुन्य के अर्थे किया हुआ। जैसे—

दुकानमें धर्मादा नीकाला हुआ धनका तथा मुआरे लारे पुन्यका किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। ३ समणट्ठा—बाबा योगी सन्यासी के अर्थे किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। उसको जीमने बाद गृहस्थी जीमे तो वह लेनाअटके नहीं। ४ वणीमग्गट्ठा—राक भीखारी के वास्ते किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष। उसको जीमने बाद गृहस्थी नामे तो वह लेना अटके नहीं। ५ निआगपिड—नित्यप्रति एक ही घरका आहारादि लेवे ते दोष। ६ सज्झायरपिड—शय्यातर याने जिसकी आज्ञामे मकानमें ठहरा हो उसके घरका आहार लेवे ते दोष। ७ रायपिड—राजपिंड जैसे राजा रे थाळ रो, राजारे पीवा हरो मदिरामिश्रित आहार लेवे ते दोष। ८ किमिच्छिए—१ दानशाळा का आहारादि लेवे ते दोष। २ कोई कोई इसा तरह भी कहते है कि बताय बताय नामसे माग माग लेवे ते दोष। ९ सघट्टिए—सचित्तके सघट्टे रो आहारादि लेवे ते दोष।

१० बहुउज्झाए—थोडा खानेमें आवे और ज्यादा नाखनेमें आवे ऐसो आहार लेवे ते दोष। ११ पडिकुट्ट कुलग—धोबी आदि निषेध कुलरो तथा चोर रे घरको आहारादि लेवे तो दोष। १२ मम्मग—वर्ज्यो हुआ घर रो आहारादि लेवे ते दोष। जैसे—कोई कहे म्हारे घेर मत आयजो उसको वर्ज्या घर कहते है। १३ अचियत कुलग—गणिका आदि अप्रीत कारी कुलरो आहार लेवे ते दोष। १४ पुव्वकम्मे पच्छाकम्मे—पहेला दोष लगावे तथा पिछे दोष लगावे जैसे—आहार वहेराया पहेला साधु आया जानकर आधा पाछा कर दे, तथा वहेराया पिछे फिर बनाइ ले, या काचे पानी सु ठाम या हाथ धो लेवे ते दोष। १५ सुईगचे (सुरच) मदिरा आदि नशे रो आहारादि लेवे ते दोष। १६ एलग—बकरो घर

आगल बैठो होवे ते उल्लंघ कर आहारादि लेवे ते दोष। १७ दारग—जिस द्वार पर लडका या लडकी आडी बैठी हो उसको उल्लंघकर आहारादि लेवे ते दोष। १८ साणग—जिस द्वार पर स्वान (कुत्ता) बैठा हो उसको उल्लंघ कर आहारादि लेवे ते दोष। १९ वच्छग—जिस द्वार पर गायको वाछडो बैठो हो उसको उल्लंघकर आहारादि लेवे ते दोष। २० उल्ल घीअन-पवेसे—और भी ऐसा कोई बछडा बैठा हो उसको उल्लंघ कर आहारादि लेवे ते दोष। २० अगाईता चलाईता—आगो पाछो करे जैसे—काचा पाणीको लोटो हाथमें है साधु साध्वी आया देख जावतो पाछो फिर जाय, या कोई सचित्त वस्तु हाथ में है साधु आया देख रख दे, तथा पहले घरमें जाकर वर्त्तन आगा पाछा करदे वह आहारादि लेवे ते दोष। २१ गोवणी काल मासणी—गर्भवती स्त्री सात मास पीछे उठ बैठ कर आहारादि दे वह लेवे ते दोष। २२ थाण पेजमाणी—बालक चूंघ रहा है उस वखत चूंघते को छोडा कर आहार वहेरावे वह लेवे ते दोष। २३ नीय दवारतामसं—कोठी ओवरी भखारी जो नीचो बारणो भीतर अंधेरो पडतो होय ऐसी जगहरो आहार लेवे ते दोष।

॥ ६ दोष आचारांग सूत्र का ॥

१ निए पिड—नित्य आहार बाटने साऊ त्याग करे, मापसे तोलसे बाटे वह आहार लेवे ते दोष। २ सखडिय (सख-डी)—न्यात जीमणवार शहेर सारणी आदिक में आहारादि लेवे ते दोष। ३ वागायं—जाच करे अन्तराय देकर आहारादि ले ते दोष।४ सघारवेणे—गमता कथा वार्त्ता से रिझाय कर आहारादि लेवे ते दोष। ५ फमेझवा (वीएजवा)—फूक

देकर या प खी सु ठार कर आहार देवे वह लेवे ते दोष। ६ भुमालुहड — नीचे भोंयरे से या नीची जगह से काढकर आहार देवे वह लेवे ते दोष।

॥ अथ २ दोष ठाणागसूत्र तथा आचारागसूत्र का ॥

१ पावणीए पावणारे अर्थं किया हुआ आहार पावणा जीम्या पहेला लेवे ते दोष। २ मसारे—अभक्ष्य मास आदि लेवे ते दोष।

॥ अथ १२ दोष भगवती सूत्र का ॥

१ अङ्गारेअ —मराई मराई राग सहित आहार करे ते दोष। उसका चारित्र कोयले समान कहा। २ धूमे—मस्तक (माथो) धूणी धूणी कुसराई कुसराई द्वेष सहित आहारादि करे ते दोष। उसका चारित्र धूंवा समान कहा। ३ सजोअणा—स्वाद नपजाने के लिये संयोग मिलाकर आहारादि लावे ते दोष। ४ खेताइकते—जो क्षेत्र में रहे वहा सूर्योदयसे पहेले और सूर्यास्त के पिछे आहारादि लेव ते दोष। ५ कालाइकत—पहेले पहोररो लायो आहारादि चोथे पहोरमें भोगवे ते दोष। ६ मगाइकते—दो कोश उपरात असनादि लेजाकर भोगवे ते दोष। ७ पमणाइकते—प्रमाणसु अधिक आहार लेवे ते दोष। ८ आउए—गृहस्थी के आमत्रण से उसके घर जाकर आहारादि लेवे ते दोष। ९ कतारभत्त —अटवी (जगल) में पोदानशाला वगैरह हो वहां आहारादि वंटताहो वह लेवे ते दोष। १० दुभिक्ख भत्त —दुष्काल में दानशाला राक भीमारीरे

न्ये घोठी हो उनका आहारादि लेवे ते दोष। ११ **वदलीया भत्त** —वरसाद आया कोई दातार भीखारी कोई जगह आहार घाटतो होय वह लेवे ते दोष। १२ **गिलाण भत्तं** —रोगी ग्लानीके लिये किया हुआ आहारादि उनको जीम्या पहेल लेवे ते दोष।

॥ अथ ५ दोष प्रश्न व्याकरण सूत्र का ॥

१ **रहग**—चूरमारो त्याग है और लाडु वाधकर वहेरावे वह लेवे तो दोष। २ **पजुजायं**—दहि रा त्याग है और दहि रो राई तो वनाकर याने पर्याय वदला कर देवे वह लेवे ते दोष। ३ **सहयागय**—साधु आपरे हाथ सु औषध पाणी अलावे आहारादि लेवे ते दोष। ४ **अनुत्तरवाह समणट्ठा (अन्तोवाहच्च)**—भीतरसु तीन घारणा उपरात काढकर देवे वह लेवे ते दोष। ५ **मोहरच** —चारन भाटरी तरह विरदावली करके आहार लेवे ते दोष।

॥ अथ निसीथ सूत्रमें आहार के ५ दोष ॥

१ **उगासिय**—बहुत से मनुष्यों में से पुकार करके कहे कि कोई यहा दातार है" ऐसा कह कर आहारादि लेवे ते दोष। **अडवी भत्त** —अटवी में मजुरादिकरो भातेरो आहारादि मजुर जीम्या पहेला लेवे ते दोष। ३ **अन्नरथीया भत्त** अन्य तीर्थी रोटी टुकडा माग कर लावे वह आहारादि लेवे ते दोष। ४ **पासंठा भत्तं (पासरिथएण)**—ढिलापा संत्या शीथला

चारी (क्रिया रहीत) का आहारादि लेवे ते दोष। ५ दुगञ्छिय कुल—ढेढ, चुडो चमार आदि निंदनीक कुल, निम्न कुल में जाने से दुर्गंछा करे उसका आहारादि लेवे ते दोष। सज्झाए निसोए सागारिय (निसीहीआए)—सज्यात ररे नेसरायरो तथा दलालोरो आहारादि लेवे ते दोष।

॥ अथ दशा श्रुतस्कंधमें आहार के २ दोष ॥

१ बालट्ठा—बालकरे अर्थे किया हुआ आहार बालक जीम्या पहेली लेवे ते दोष। २ गब्भणी अट्ठा—गर्भिणी स्त्रीके अर्थे किया आहारादि गर्भवती स्त्री जिम्या पहेले आहारादि लेवे ते दोष।

॥ बृहत्कल्पमें आहारके १ दोष ॥

१ प्रासिया—कालप्रमाण उपरको तथा वासी राखने खावे ते दोष।

॥ इति आहार के १०६ दोष समाप्तम् ॥

ओछो अधिको आगो पाछो सूत्र विपरित लीखा गयो होय तो सुध करे और सज्जन हमको जणाय दे।

भूल चूक तस्स मिछामि दुक्कडं ॥

संवत् १६७१ वर्षे फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी बुधवासरे ॥ शुभं भवतु ॥

श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय। बीकानेर (राजपूताना)



ग्यारह द्वार सात समकित को थोकडो ।

१ नाम द्वार	१ क्षायिक समकित	२ उपशम समकित	३ क्षयोपशम समकित	४ क्षायिकरी वेदक समकित	५ सास्वादन समकित	६ मिश्र समकित	७ मिथ्यात्व
२ लक्षण द्वार	७ प्रकृति खपावे	७ प्रकृति उपशमावे	७ प्रकृति क्षयोपशमावे	६ खपावे १ वेदे	उपशम से पडे तो अनन्तानु बंधीरो उदय	मिश्र मोहनीरो उदय	मिथ्यात्व मोहनीरो उदय
३ स्थीति द्वार	आदि अनत	अतर्मुहूर्त्त	जघन्य अतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट ६६ सागर झाजेरी	जघन्य उत्कृष्ट एक समय बाद क्षायक फरसे	जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ आवली का	अंतर्मुहूर्त्त	३ भांगा—१ अनादि अनंत अभवि २ अनादि सांत भवि ३ सादि सान्त पडवाई समदृष्टि तीजे भागेरो स्थीति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट देश उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन
४ अतर द्वार	आंतरो नहीं	जघन्य, अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट अंतर पडे तो देश उणो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तन काल	उपशम माफिक	आंतरो नहीं वेदक आया पीछे क्षायक निश्चय आवे	उपशम माफिक	उपशम माफिक	पहिले दूजे भागेरा आंतरो नहीं, तीजे भांगे सादि सांतरो आंतर पडे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट ६६ सागर झाजेरो

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर।

५ आकरस द्वार	क्षायक भव में एकवार आवे, आया पीछे जावे नहीं	जघन्य एकभव में एकवार उत्कृष्ट दो वार घणा भव आसरे जघन्य दो वार, उत्कृष्ट पान्च वार	क्षयोपशम एक भवमें जघन्य एक वार, उत्कृष्ट प्रत्येक हजार वार घणां भवमें जघन्य दो वार, उत्कृष्ट असंख्याती वार	एक भव में एकवार आवे क्षाय करी प्राप्ति करे	उपशम माफिक	क्षयोपशम माफिक	क्षयोपशम माफिक
६ जीवरा भेद	२	२	२	१	१	१	१५
७ गुणठाणा द्वार	११	८	४	४	दूजो	तीजो	पहेलो
८ योग द्वार	१५	१३	१५	६	१३	१०	१३
९ उपयोग द्वार	६	७	७	७	५	५	६
१० लेश्या द्वार	६		६	६	६	६	६
११ अल्प बहुत्व द्वार	६ क्षायकरा अनंतगुणा	तीजे उपशमरा सख्यात गुणा	पाचमे क्षय उपशमरा सख्यात गुणा	पहला क्षाय करीवेदकरा सबसे थोडा	दूजा सास्वादनरा संख्यात गुणा	चाथे मिश्ररा असख्यात गुणा	सातमें मिथ्यात्वरा अनत गुणा

* श्री वीतरागाय नम *

॥ अथ श्री अट्ठाणु बोलरो बासठीयो ॥

अथ श्री अट्ठाणु बोलनो बासठीयो ।	जीव०	गुण०	योग,	उप०	लेश्या,
१ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य (तेथका)	२	१४	१५	१२	६
२ मनुष्यणी संख्यात गुणी	२	१४	१३	१२	६
३ बादर तेउकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	१	३	३
४ अनुत्तर विमान ना देवता असंख्यातगुणा	२	१	११	६	१
नव ग्रैवेयकरी तीन त्रिक					
५ उपरलीत्रिकना देवता संख्यात गुणा	२	२५३	११	६	१
६ मध्यमत्रिकना देवता संख्यात गुणा	२	२५३	११	६	१
७ हेठलो त्रिकना देवता संख्यात गुणा	२	२५३	११	६	१
८ बारमा देवलोकना देवता संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
९ इग्यारमा देवलोकना देव संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१० दशमा देवलोकना देव संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
११ नवमा देवलोकना देव संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१२ सातमी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१३ छट्ठी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१४ आठमा देवलोकना देवता असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१५ सातमा देवलोकना देवता असंख्यातगु०	२	४	११	६	१
१६ पाचमी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	२
१७ छट्ठा देवलोकना देवता असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१८ चोथी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
१९ पाचमा देवलोकना देवता असंख्यात गु०	२	४	११	६	१
२० तीजी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	[illegible]
२१ चोथा देवलोकना देवता असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१

(ख)

२२ तीजा देवलोकना देवता असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२३ बीजी नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२४ छमुर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा	१	१	३	४	३
२५ बीजा देवलोकना देवता असंख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२६ बीजा देवलोकनी देवी संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२७ पहेला देवलोकना देवता संख्यात गुणा	२	४	१	६	१
२८ पहेला देवलोकना देवी संख्यातगुणी	२	४	११	६	१
२९ भुवनपति देवता असंख्यात गुणा	३	४	११	६	४
३० भुवनपति देवी संख्यात गुणा	२	४	११		४
३१ पहेलो नरकना नेरिया असंख्यात गुणा	३	४	११	६	१
३२ खेचर, तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
खेचर पुरुषा असं योनिया					
३३ खेचरनी स्त्री संख्यात गुणी	२	५	१३	६	६
३४ थलचर पुरुष संख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३५ थलचरनी स्त्री संख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३६ जलचर पुरुष संख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३७ जलचरनी स्त्री संख्यात गुणी	२	५	१३	६	६
८ व्यंतर देवता संख्यात गुणा	३	४	११	६	४
३९ व्यंतर देवी संख्यात गुणा	२	४	११	६	४
४० ज्योतिषी देवता संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
४१ ज्योतिषीनी देवी संख्यात गुणा	२	४	११	६	१
४२ खेचर नपुंसक संख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४३ थलचर नपुंसक संख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४४ जलचर नपुंसक संख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४५ चौरिन्द्रिय पर्याप्ता संख्यात गुणा	१	१	२	४	३
४६ पंचेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाहिया	२	१२	१४	१०	६
४७ बेइन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	२	३	३

४८ तेइन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	२	३	३
४९ पचेन्द्रिय अपर्याप्ता असंख्यात गुणा	२	३	५	८८६	६
५० चौरिन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाहिया	१	२	३	६	३
५१ तेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाहिया	१	२	३	५	३
५२ बेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाहीया	१	२	३	५	३
५३ प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति काय पर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	१	३	३
५४ बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	१	३	३
५५ बादर पृथ्वी काय पर्याप्ता असंख्यात०	१	१	१	३	३
५६ बादर अपकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	१	३	३
५७ बादर वाउकाय पर्याप्ता असंख्यात गु०	१	१	४	३	३
५८ बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गु०	१	१	३	३	३
५९ प्रत्येक शरीर बादर वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	३	३	४
६० बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गु०	१	१	३	३	३
६१ बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्या०	१	१	३	३	४
६२ बादर अप्काय अपर्याप्ता असंख्यात०	१	१	३	३	४
६३ बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात०	१	१	३	३	३
६४ सूक्ष्मतेउकाय अपर्याप्ता असंख्यात गु०	१	१	३	३	३
६५ सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	३	३	३
६६ सूक्ष्म अप्काय अपर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	३	३	३
६७ सूक्ष्म वाउकाय अपर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	३	३	३
६८ सूक्ष्मतेउकाय पर्याप्ता संख्यात गुणा	१	१	१	३	३
६९ सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	१	३	३
७० सूक्ष्म अप्काय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	१	३	३
७१ सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	१	३	३
७२ सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणा	१	१	३	३	३

७३ सूक्ष्म निगाद पयाप्ता स ख्यात गु णा	१	१	१	३	३
७४ अभवी अनत गु णा	१४	१	१३		
७५ पड़वाइ समदृष्टि अनतगुणा	१४	१४		१८	६
७६ सिद्ध भगवत जी अनंतगुणा	०		०	२	०
७७ बादर वनस्पति पयाप्ता अनंतगुणा	१	१	१	३	३
७८ बादर पयाप्ता विशेषाहिया	६	१४	१५	१२	६
७९ बादर वनस्पति अपयाप्ता अस ख्यातगु०	१	१	३	३	४
८० बादर अपयाप्ता विशेषाहिया	६	३	१	८५६	-
८१ समुच्चय बादर विशेषाहिया	१०	१४	१२	१८	६
८२ सूक्ष्म वनस्पति अपयाप्ता असंख्यातगु०	१	१	३	३	३
८३ सूक्ष्म अपयाप्ता विशेषाहिया	१	१	३	३	३
८४ सूक्ष्म वनस्पति पयाप्ता स ख्यात गुण	१	१	१	३	३
८५ सूक्ष्म पयाप्ता विशेषाहिया	१	१	१	३	३
८६ समुच्चय सूक्ष्म विशेषाहिया	२	१	३	३	३
८७ भव सिद्धिया विशेषाहिया	१४	१४	१५	१८	६
८८ निगोदिया जाव विशेषाहिया	४	१	३	३	३
८९ वनस्पति जीव विशेषाहिया	४	१	३	३	४
९० एकेन्द्रिय जीव विशेषाहिया	४	१	१	३	४
९१ तिर्यञ्च जाव विशेषाहिया	१४		१३	६	६
९२ मिथ्या दृष्टि जीव विशेषाहिया	१४	१	१३	६	६
९३ अव्रती जाव विशेषाहिया	१४	४	१३	६	६
९४ सकषायी जाव विशेषाहिया	१४	१०	१	१०	६
९५ छद्मस्थ जाव विशेषाहिया	१४	१२	१२	१०	६
९६ सयोगी जीव विशेषाहिया	१४	१३	१३	१२	६
९७ संसारी जीव विशेषाहिया	१४	१४	१५	१२	६
९८ समुच्चय जाव विशेषाहिया	१४	१४	१५	१२	६

२४ माल समुर्च्छिम मनुष्यका दंडक २४ मुहूर्त्त नो विरह तेमणी ना

उपजे ने असासतो । ६' मो छद्मस्थ १। १२, मा गुणठाणाना । ६७ मो बोल संसारना १४ मों गुणठाणानावधि थाय । तीन बोल असासता जाणवा । १ एक सर्वसु थोडो । ३४ सुं लइने ७७ सुधी ए चार बोल अनन्ता चाल्या । ३० असंख्याता । २८ संख्याता । ३० विशेषाहिया । एवं ६८ बोल । तेमां ५४ मा बादर निगोद पर्याप्ता । ६० मो बादर निगोद अपर्याप्ता । ७२ मा सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता । ७३ मा सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता ए चार शरीरनी अपेक्षाए कह्या । पिण जीव अनंता छे ।

सबसुं थोडो १ + अनन्तगुणा ४ + असंख्यात गुणा ३५ + विशेषाहिया ३०+संख्यात गुणा २८ एवं = ६८ ॥

स्त्री वेदी ६ + पुरुषवेदी २३ + सवेदी १६ + अवेदी १ + नपुंसक ४६ एवं = ६८ ॥

नियमा भवी ३ + नोभवी नोअभवी १ + अभवी १ + भवी अभवी + ६३ = ६८ ॥

॥ इति श्री अट्ठाणुं बोलरो बासठीयो समाप्तम् ॥

अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन ग्रन्थालय

बीकानेर—(राजपूताना)

॥ शुभं भवतु ॥



७ [illegible] थोकड़ा भा० ३ इसमें २४ ठाणा आदिका थोकड़ा है।
८ [illegible] भा० ४ इसमें सात नय, चार निक्षेप और [illegible] के [illegible] थोकड़ा है।

११ शील [illegible] संग्रह
१२ [illegible] संग्रह भा० १
१३ [illegible] भा० २
१४ सामायिक तथा नित्य नियम
१५ सुबोध [illegible] संग्रह
१६ [illegible] बोलका थोकड़ा विस्तार से
१७ [illegible] तथा [illegible]
१८ आलोयणा संग्रह
१९ [illegible] सम्यक्त्वके ६७ बोल
२० [illegible] भा० १-२-३
२१ विविध ढाल [illegible] मति तीन गुप्तिकी

ढाल, चतुर्विंशति जिन [illegible], [illegible] की ढाल, साधु आचार [illegible], [illegible] [illegible] ढाल, [illegible] ढाल, [illegible] ढाल, [illegible] ढाल, [illegible] पुद्गल [illegible] १, साधुके आहारका १०६ दोष, [illegible] और समाधि मरणवालोंकी १८ भावना इत्यादिक हैं।
२२ अञ्जनासतीका रास तथा संक्षिप्त [illegible]
२३ लघुदण्डक थोकड़ा
२४ [illegible] सूत्र मूल [illegible]
२५ [illegible] सूत्र मूल [illegible]
२६ [illegible] तथा [illegible]
२७ लघु प्रतिक्रमण [illegible]

नोट — [illegible] सामायिकादि [illegible] के लिये [illegible] की बिना मूल्य भेजी जाती है।

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया

का

जैनग्रन्थालय जैन विद्यालय तथा कन्या पाठशाला।

मोहल्ला मरोटियोंका

बीकानेर—राजपूताना

Jain Jnyan Thokara Sangrah

To be had at

(1) The Jain Library,
(2) The Jain National Seminary,
(3) The Jain National Girls Institute,
Moholla Morotian
BIKANER, (Rajputana)

२०१ हरिसन रोड "नरसिंह प्रेस" कलकत्ता में मनेजर—पण्डित काशीनाथ जैन द्वारा मुद्रित।

श्री तेरापंथ किशोर मंडल
बीकानेर

जैन दर्शन में तत्त्व-मीमांसा

—मुनि नथमल